अप्रैल 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

Pay only Rs. 120
(for 12 issues) and
save Rs. 24

Go, grab
the discount!

Offer closes on May 1, 2005

If you are a subscriber, you can avail of the concession for a GIFT Subscription

---
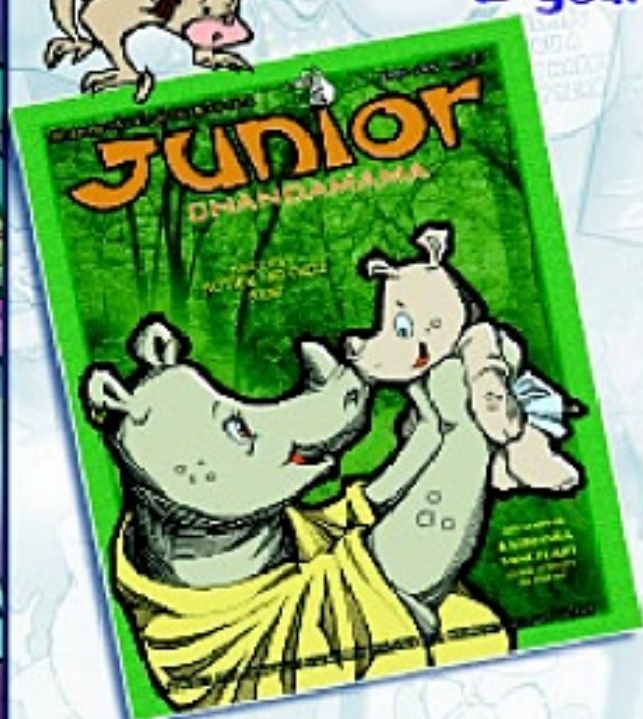
SUBSCRIPTION FOR JUNIOR CHANDAMAMA

☐ Please enrol me as a new subscriber for **Junior Chandamama** in English

☐ I am a subscriber(Subscription No: ....); I would like to take out a GIFT Subscription.

My name / My friend's name : ....

Home address : ....

.... PIN CODE : ....

I am enclosing DD / M.O. Receipt No. .... issued by ....

P. O. for Rs 120.00

Signature

ATTACH THIS LABEL ON THE FIRST COPY

This is a GIFT copy with love from ....

.... **Town / City** ....

चन्दामामा सम्पुट - १०८ अप्रैल २००५ सञ्चिका - ४

अंतरंग

विशेष आकर्षण

महात्मा गांधीजी का जन्म २ अक्तूबर को हुआ था। हमारे फरवरी २००५ अंक के ३७ पन्ने में गलती से उनका जन्म २८ बताया गया है। गलती का एहसास करते हैं।

– *सम्पादक*

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

एकता ही बल है

जब हम प्रकृति पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि अपनी सुरक्षा के लिए पक्षी एक साथ उड़ते हैं और पशु झुण्डों में चलते हैं। आरम्भ में, मनुष्य भी समुदायों में रहते थे। जब वे पर्याप्त समृद्ध बन गये तब उन्होंने एकात्मक जीवन बिताना अधिक पसन्द किया। लेकिन जब भी खतरे का समय आता है या कोई त्रासदी हो जाती है, तब वे फिर से एक साथ मिल जाते हैं।

तीन महीने पूर्व हमारे देश को एक बहुत ही दुखद त्रासदी से गुजरना पड़ा। इसमें मरनेवालों के लिए जहाँ एक ओर लोगों ने आसूँ बहाये, वहीं, उन्होंने यह भी महसूस किया कि आहत होकर किसी प्रकार जीवित बचे हुए लोगों को तुरन्त राहत और मदद देना बहुत जरूरी है। सरकारों द्वारा सहायता के लिए अपील की गई। समाचार पत्रों तथा टी.वी.चैनल्स ने बडी मात्रा में दानों की घोषणा की तथा राहत कोष खोले। अनेक गैरसरकारी संस्थाओं ने शैक्षणिक तथा आध्यात्मिक संघटनों के साथ मिलकर प्रभावित क्षेत्रों में तथा परिवारों के बीच जाकर सहायता करने के लिए अपने स्वयं सेवकों को तैयार किया।

भारत एक जुट होकर उठ खड़ा हुआ। राष्ट्र ने अपने ही साधनों के बल पर त्रासदी के परिणामों का सामना करने का दृढ़ निश्चय किया। वास्तव में यह एक शक्ति-प्रदर्शन था, लोगों में एकता की शक्ति का।

चन्दामामा को आशा है कि यह केवल आरम्भ मात्र था, लेकिन एक महान आरम्भ और एकता की ऐसी ही शक्ति भविष्य में भी लोगों में गोचर हो सकेगी।

सम्पादक:विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (सितम्बर)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

रामकुमार की मूर्खता :

रामकुमार ने कहा, "नहीं! मैंने चाभी उसी स्थान पर नहीं रखी?"

"तब फिर उसे कहाँ रखी?" कृष्ण कुमार अब बहुत उत्सुक था।

"ओह! मैं चाभी को अलग-अलग स्थान पर रखता रहा," रामकुमार ने कहा। "लेकिन पता नहीं चोर चाभी कैसे पा जाते हैं।"

"हे! ये तो बड़ी अजीब बात है। क्या पहले कभी तुमने इस बात का जिक्र किसी और से किया था?" कृष्णकुमार ने पूछा?

रामकुमार ने कहा, "नहीं"।

दोनों इस गुथ्थी को सुलझाने में लगे थे कि तभी रामकुमार अचानक बोला-

"कहीं मैं ये भूल न जाऊँ कि मैंने चाभी कहाँ रखी है, मैं उस स्थान का नाम, जहाँ चाभी रखता था, कागज़ पर लिखकर तकिये के नीचे रख लेता था।"

कृष्णकुमार ने अपना माथा पीट लिया और कहा, "रामकुमार, यही तो तुमने गलती कर दी, क्योंकि चोर तुम्हारे तकिये के नीचे रखे कागज़ को पढ़कर चाभी प्राप्त करके, चोरी करने में सफल होते रहे। और तुम अपनी गहन निद्रा में डूब रहने के कारण उन्हें पकड़ने में असफल रहे।"

रामकुमार को अपनी गलती पर बहुत दुख हुआ और वह पछताने लगा।

कृष्णकुमार ने रामकुमार को सलाह दी कि "अगली बार वह सोने से पहले अलमारी की चाभी को दूसरे स्थान पर रखने के साथ-साथ तकिये के नीचे कोई सबूत भी न छोड़े"।

और उसे समझाया कि "पैसों का होना ही सबसे बड़ी बात नहीं है बल्कि उसकी सुरक्षा के लिए दिमाग का सही प्रयोग करने में बुद्धिमानी है।"

CHAKRADHAR SHUKLA, QT.No.II/1336,
ANPARA COLONY, ANPARA SONBHADRA
PIN-231225, (U.P.)

मनुष्य का शाप

प्रताप शहर गया हुआ था। उसके आते ही जया ने अपने बेटे प्रताप से कहा, ''लगता है कि केले का घौद जल्दी ही बिक गया।''

प्रताप मेहनती था। घर के पिछवाडे में उसने केले के पौधे रोपे। जब केले पक जाते थे, वह उन्हें शहर ले जाता था और बेचता था। इससे उसे कम से कम सौ रुपये मिल जाते थे।

प्रताप की पत्नी विमला अपने पति के लिए पीने का पानी ले आयी और धीमे स्वर में कहा, ''कल बच्चों के स्कूल का शुल्क भरना है।'' ''हाँ हाँ, जानता हूँ। महीनों तक मेहनत करने के बाद आज यह रक़म मिली है। छी, यह भी कोई ज़िन्दगी है। यह सब मेरी बदनसीबी नहीं तो और क्या है।'' कहते हुए, प्रताप ने वह रक़म विमला के हाथ में रख दी।

माँ जया ने पूछा, ''बेटे, यह भी कोई बात हुई? इतना चिढ़ते क्यों हो?'' ''तो क्या पिताजी के किये काम पर खुश होंगे?'' प्रताप ने नाराज़ होते हुए कहा।

उसकी बातों पर जया ने चकित होते हुए कहा, ''दस साल पहले तुम्हारे पिता की मौत हुई और आज क्यों उनपर अ पना गुस्सा उतार रहे हो?''

''माँ, जो भी हुआ है, तुम अच्छी तरह से जानती हो। पिताजी के दोस्त नरसिंह ने पंद्रह साल पहले यहाँ का अपना खेत बेच दिया और शहर चला गया। उसने पिताजी को भी अपने साथ आने की सलाह दी, पर पिताजी अपने जन्म-स्थल छोड़कर कहीं जाने के लिए तैयार नहीं थे। नरसिंह ने शहर जाकर व्यापार किया और खूब कमाया। अब चार एकड़ ज़मीन ही हमारे पास रह गयी। उसकी आमदनी से हम पांच लोगों को जीना है। पिताजी भी व्यापार करते तो हमें ये दिन देखने नहीं पड़ते।''

अनुराधा

इसपर जया ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''यह हमारे बस की बात नहीं है बेटे। भगवान जितना देता है, उसी में हमें खुश रहना चाहिये।''

''वेदांत की ये बातें छोडो माँ। नरसिंह का बेटा गोविंद मेरी ही उम्र का है। जानती है, वह कितना सुखी है! शहर और हमारे गांव के बीच के जंगल में ऋषीश्वर के दर्शन करने वह बग्घी में जा रहा था। मुझे देखते ही बड़े ही प्यार से उसने बग्घी में बिठा लिया। उसका वैभव देखते हुए मेरा दिल जल। जा रहा है,'' प्रताप ने अपनी असहायावस्था पर क्रोधित होते हुए कहा।

बेटे के क्रोध को देखते हुए जया चुप रह गयी। उस रात को विमला ने पलंग पर लेटे अपने पति से कहा, ''आप भी क्यों न उस ऋषीश्वर के दर्शन कर लेते। हो सकता है, उनकी कृपा से हमारी ज़िन्दगी भी बदल जाये।'' प्रताप को पत्नी की सलाह अच्छी लगी। दूसरे ही दिन सबेरे वह ऋषीश्वर के दर्शन करने गया।

प्रताप को देखते ही ऋषीश्वर ने कहा, ''पुत्र, बहुत ही दुखी दिख रहे हो। बात क्या है?''

प्रताप ने अपनी हालत बतायी और कहा, ''आपका भक्त गोविंद कभी हमारे ही गाँव का था। उसके पिता ने उसे लाखों रुपये और भारी संपत्ति दी। मेरे पिता ने मुझे जो भी दिया, वह नहीं के बराबर है। मैं ऐसी ज़िन्दगी से ऊब गया हूँ।''

ऋषीश्वर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''जीवन में उतार-चढ़ाव होते ही रहते हैं। परं तु तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारे लिए जो संपत्ति दी, उसे तुम पहचान नहीं पा रहे हो। वह संपत्ति है, स्वास्थ्य। तुम मेहनत करते हो, पेट भर खाते हो। घर में सब तुम्हें चाहते हैं। इससे बढ़कर भाग्य क्या हो सकता है! फिर भी तुममें जो असंतोष पैदा हुआ है, वह अपने दोस्त को देखने के बाद ही पैदा हुआ। इसके पहले तो तुम्हें कोई शिकायत नहीं थी। तुम प्रसन्न और सुखी थे। गोविंद के बारे में तुम्हें सच्चाई मालूम पड़ जाए तो ईर्ष्या के कारण तुममें जो असंतोष फैला है, वह दूर हो जायेगा।''

''गोविंद तो सुख ही सुख भोग रहा है। उसे किस बात की कमी है?'' प्रताप ने पूछा।

''तो सुनो। संपत्ति, वैभव व ऐश्वर्य से प्राप्त होनेवाले सभी रोगों ने इस उम्र में ही उसे घेर लिया। करोड़ों की संपत्ति है, पर क्या लाभ? वह मीठा खा नहीं सकता, क्योंकि वह मधुमेह से पीडित

है। खाद्य पदार्थों में नमक नहीं होना चाहिये, क्योंकि वह रक्तचाप का शिकार है। थकावट के कारण वह चार क़दम भी पैदल नहीं जा सकता। इनके साथ-साथ व्यापार में व्यस्त होने के कारण नींद नहीं आती। दवाओं और मन की शांति के लिए अक़्सर यहाँ आया करता है।'' ऋषीश्वर ने कहा।

यह जानकर प्रताप आश्चर्य में डूब गया।

ऋषीश्वर फिर कहने लगे, ''चाहते हो तो क्षणों में तुम्हें करोडपति बना सकता हूँ। वर्तमान प्रशांत जीवन चाहते हो या मन क ी शांति खोकर तडपनेवाले करोडपति का जीवन, तुम्हीं निर्णय कर लो, '' यों कहते हुए उन्होंने प्रताप के सिर पर हाथ रखा। प्रताप की आँखें तुरंत बंद हो गयीं।

प्रताप भव्य भवन के एक कक्ष में एक पलंग पर लेटा हुआ है। भवन भर में सेवकही सेवक हैं। सामने फल हैं और हैं स्वादिष्ट पकवान। परंतु आयास के बावजूद वह उठ नहीं पा रहा है। सेवकों को बुलाने की भी ताक़त उसमें नहीं है। बड़ी कोशिश के बाद वह उठ पाता है और एक क़दम आगे बढ़ाते ही गिर जाता है। वह पत्नी और माँ को बुलाता है तो वे सेवकों को बुलाने लगती हैं।

''नहीं, नहीं, मुझे ऐसी जिंदगी नहीं चाहिये,'' कहकर चिल्लाते हुए वह आँख खोलता है। देखता है कि सामने ऋषीश्वर मुस्कुराते हुए बैठे हैं। प्रताप कहने लगा, ''आपने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे करोडपति की यातनाएँ नहीं चाहिये। मुझे चाहिये, मेरी वही पत्नी, जो दुख -सुख को मेरे साथ बांटती है; वही माँ, जो मुझे जान से भी ज्यादा चाहती है, वही दोनों बच्चे, जिन्हें देखते ही मेरे मन को शांति मिलती है।''

''बहुत प्रसन्न हूँ, पुत्र। संतृप्ति, स्वास्थ्य, आनंद-ये मनुष्य के लिए नितांत मुख्य हैं। उनके होने पर करोड़ों रुपये भी व्यर्थ हैं। एक और बात! मनुष्य के लिए ईर्ष्या शाप समान है। अपने मित्र गोविंद को देखने के बाद ही वह तुममें जाग उठी। अब वह हट गया है। अब से तुम्हारे घर में आनंद ही आनंद फैला रहेगा।'' कहकर उन्होंने आशीर्वाद दिया।

प्रताप ने सविनय ऋषीश्वर के पैरों को प्रणाम किया और संतुष्ट होकर घर लौटा।

बुरा मत कर, बुरा होगा

बच्चों ने यथावत् जल्दी ही खाना खा लिया और सावित्री के इर्द-गिर्द बैठकर जिद करने लगे, ''दादी, कहानी सुनाओ न।'' तब रघु नामक एक बालक ने कहा, ''दादी, कहते हैं कि बुरा मत कर, बुरा होगा। मेरे दादा मेरे पिताजी से बता रहे थे कि चलपति के साथ भी ऐसा ही हुआ। पर मुझे अब तक नहीं मालूम है कि इसका क्या मतलब है। बताओ न दादी।''

दादी ने प्यार से रघु को देखते हुए कहा, ''इतनी छोटी उम्र में भी, ऐसी बातों को याद रखते हो, यह सचमुच ही बड़ी बात है। बुरा मत कर, बुरा होगा की कहानी बताती हूँ, ध्यान से सुनो।'' फिर वह यों कहानी सुनाने लगीः

बहुत पहले की बात है। मुंगेर नामक गांव में केशव नामक एक किसान रहा करता था। पत्नी, चार बच्चे, माँ-बाप-यही उसका परिवार था। केशव के परिवार का हर सदस्य परिवार चलाने के लिए कोई न कोई काम करता था, इसलिए बिना उतार-चढ़ाव के वे जी रहे थे।

केशव के घर के सामने का घर श्याम का था। केशव के सुखी परिवार को देखकर वह जलता था। श्याम की बड़ी बेटी सीता और केशव की बड़ी बेटी लक्ष्मी समवयस्क थीं। अब दोनों शादी की उम्र की भी हो गयीं।

एक दिन सबेरे-सबेरे केशव के घर के सामने एक घोड़ागाड़ी आकर रुकी। उस घोड़ागाड़ी को देखते ही लगता था कि इसका मालिक अवश्य ही धनी होगा। केशव का दूर का रिश्तेदार माधव पत्नी और बच्चों सहित उस गाड़ी से उतरा। छे-सात साल पहले माधव किसी काम पर परिवार सहित यहाँ आया था और दो दिन यहीं ठहरा था। इन दो दिनों में ही केशव के परिवार के सदस्यों की जीवन-शैली उसे बहुत अच्छी लगी। उससे वह बहुत आकर्षित हुआ। केशव की बेटी

लक्ष्मी की होशियारी व समझदारी पति-पत्नी दोनों को अच्छी लगी। उसी दिन उन्होंने लक्ष्मी को अपनी बहू बनाने का निश्चय कर लिया था। अब इसी काम पर उनका यहाँ फिर आना हुआ।

श्याम को जब मालूम हुआ कि एक पाई भी दहेज दिये बिना लक्ष्मी लखपति की बहू होनेवाली है, तो वह चुप नहीं रह सका। वह ईर्ष्या से जल उठा। उसने फ़ौरन निर्णय कर लिया कि किसी भी हालत में यह शादी रोकनी होगी। वह केशव के घर गया,माधव का कुशल-मंगल पूछा और उसे अपने घर ले आया।

श्याम ने उससे चिकनी-चुपड़ी बातें कीं, और कहा, "माधवजी ! केशव एकदम सज्जन है और उसकी बेटी की सुंदरता के बारे में कितना भी कहूँ, कम है। पर वह गूलर फल के समान है। वह लड़की मिरगी रोग से पीडित है। इस रोग की बात को छिपाकर शादी करवाने का वे षड्यंत्र रच रहे हैं। वैद्य ने शायद यह कहा भी कि शादी हो जाए तो रोग कम हो जायेगा।"

उसी दिन शाम को माधव का परिवार वहाँ से चले जाने की तैयारियाँ करने लगा। श्याम का पड़ोसी भूषण यह जानता था कि माधव का परिवार क्यों लौट रहा है। यह भूषण धन के पीछे पागल था। श्याम की ईर्ष्या को अपने अनुकूल बनाकर उससे धन ऐंठने की उसने एक योजना बनायी।

योजना के अनुसार उसने श्याम से एकांत में कहा, "देखते-देखते लक्ष्मी का भाग्य उसके हाथ से फिसल गया। ख़ैर, छोड़ो इन बातों को।

तुम्हारी बेटी-सीता के योग्य एक लड़का मैंने ढूँढ़ निकाला है। उसका नाम गोविंद है। इस दुनिया में दादी के सिवा उसका कोई नहीं है। उसके पास लाखों की संपत्ति है। वह कहती है किअपने पोते को तभी यह संपत्ति दूँगी, जब वह अपनी पूंजी से कोई व्यापार शुरू करे। ऐसे तो गोविंद काबिल है, पर व्यापार करने के लिए उसके पास पूंजी नहीं है। वह चाहता है कि दहेज में दस हज़ार रुपये लूँ और उस रक़म से व्यापार शुरू करूँ।"

भूषण के इस प्रस्ताव ने श्याम के मन में आशा जगा दी। उसे लगा कि दस हज़ार रुपये मात्र दहेज में देने से धनीपरिवार का एक युवक दामाद बनेगा और ऐसे तो व्यापार शुरू करने के बाद उसकी दादी की संपत्ति उसे मिलेगी ही।

उसने तुरंत यह रिश्ता स्वीकार कर लिया और

एक हफ्ते के अंदर ही बिना किसी की जानकारी के भूषण के घर में ही सीता और गोविंद के मिलने का प्रबंध किया। सीता को देखते ही बेहद खुश होते हुए गोविंद ने अपनी अंगूठी उसे भेंट स्वरूप दी। श्याम ने बहुत ही खुश होते हुए गोविंद की इच्छा के अनुसार उसे वहीं दस हज़ार रुपये भी दिये।

गोविंद के चले जाने के तीसरे दिन सबेरे शहर से आये माधव के साथ केशव, श्याम के घर आया। इधर-उधर की बातें करने के बाद माधव ने श्याम से पूछा, ''सीता की शादी गोविंद से कब होनेवाली है?''

श्याम ने कल्पना भी नहीं की थी कि माधव यह सवाल करेगा, क्योंकि वह समझता था कि बाहर के किसी आदमी को यह मालूम ही नहीं। माधव ने हँसते हुए कहा, ''तुमने दस हज़ार रुपये जो दिये, उसे बांटने को लेकर गोविंद और भूषण एक -दूसरे से झगड़ रहे हैं। संयोगवश मैं उधर से गुज़र रहा था तो मुझे यह बात मालूम हुई। मैंने खोजबीन की तो मालूम हुआ कि गोविंद शहर का अव्वल दर्जे का धोखेबाजहै। भूषण ने उसकि सहायता से तुम्हें धोखा दिया और तुमसे धन ऐंठा। वे दोनों अब जेल में हैं।''

श्याम ने शर्म के मारे सिर झुका लिया। माधव ने तब कहा, ''अब बताना श्याम, लक्ष्मी के मिरगी रोग के बारे में तुमने जो मुझसे बताया, क्या वह सच है?'' श्याम ने धीमे स्वर में कहा, ''नहीं, वह सच नहीं हैं। मैंने आपसे झूठ कहा।''

''इसलिए तुम्हें यह सज़ा मिली। कहते हैं न, बुरा मत कर, बुरा होगा। यही वह है। आगे से ही सही, पडोसियों से ईर्ष्या व द्वेष मत करना। इनसे दूर रहना।'' यों कहते हुए उसने उसका कंधा थपथपाया।''

कहानी समाप्त करने के बाद दादी ने कहा, ''देखा बच्चो, धोखेबाज़ श्याम पर क्या गुज़रा? वह खुद एक और धोखेबाज के चंगुल में फंस गया। उसने धन भी खो दिया और साथ ही उसकी जगहँसाई भी हुई। इसलिए हमें चाहिये कि हम ऐसे धोखे से भरी सोच से दूर रहें।''

''हाँ, दादी'' कहते हुए सब बच्चों ने आनंदपूर्वक तालियाँ बजायीं।
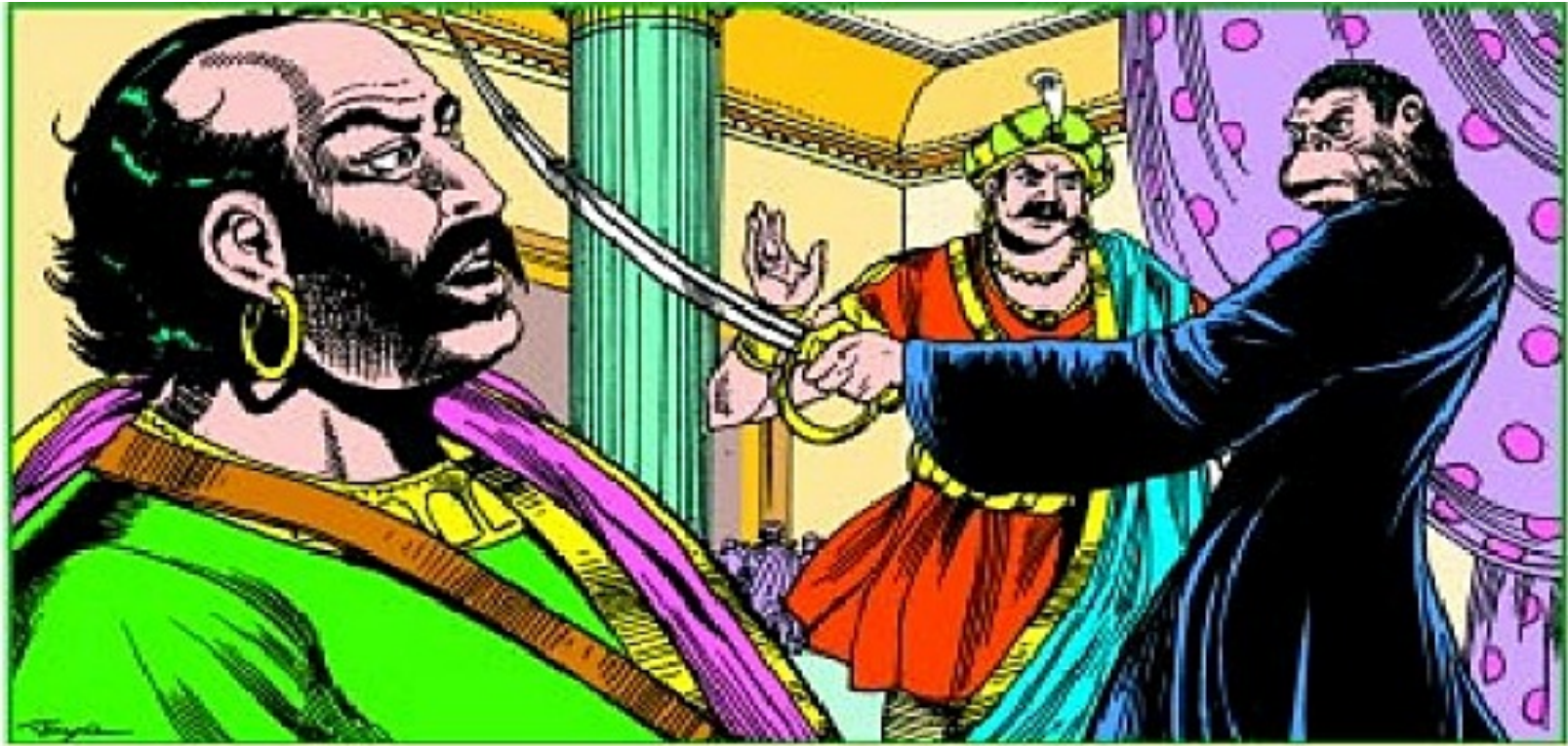
भल्लूक मांत्रिक

18

(माया मर्कट ने राजा जितकेतु के नगर पर होनेवाले ख़तरे की चेतावनी दी। राजा ने जब सुना कि हमला करनेवालों में एक राक्षस भी है, तब राजा ने माया मर्कट को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया। मंत्री जीवगुप्त ने माया मर्कट पर तलवार का वार करना चाहा, पर मर्कट ने उसकी तलवार खींच ली और जीवगुप्त पर अपनी तलवार उठाई। उसके बाद...)

माया मर्कट ने मंत्री जीवगुप्त पर तलवार उठाई, इस पर राजसभा में हाहाकार मच गया। राजा जितकेतु झट से आगे बढ़ा, मर्कट का हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए बोला, ''हे मर्कटामात्य! जल्दबाजी मत करो। सभाभवन में खून के बहने से राज्य की हानि हो सकती है। मैंने जीवगुप्त को मृत्युदण्ड सुनाया है। उसे अमल करनेवाला व्यक्ति नगर का प्रधान बधिक होता है; यही हमारे राज्य का नियम है।''

राजा के मुँह से ये शब्द सुनते ही माया मर्कट ने अपनी तलवार म्यान में रख ली, तब जीवगुप्त की ओर मुड़कर उससे कहा, ''अरे पुराने मंत्री! तुम फिलहाल मृत्यु दण्ड से बच गये हो! इसलिए इसी क्षण तुम इस राज्य को छोड़ चले जाओ!''

जीवगुप्त ने पृथ्वी पर गिरी अपनी तलवार हाथ में लेकर म्यान में रख ली, राजा तथा मर्कट की ओर एक बार क्रुद्ध दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''महाराजा का कहना है कि उन्होंने मुझे शिरच्छेद का दण्ड

सुनाया है, पर यह मर्कट मुझे देश को छोड़कर चले जाने को कहता है।'' फिर दरबारियों की ओर मुड़कर पूछा, ''हे नगर के प्रमुख नागरिको! अब आप ही लोग बताइये कि मुझे क्या करना होगा?''

दरबारी सब संकोच में पड़ गये कि राजा के आदेश का समर्थन करना है या नया मंत्री बने मर्कट की बात का समर्थन करना है! तभी सामंत राजा सूर्यभूपति सभा भवन में पहुँचा, राजा जितकेतु को प्रणाम करके बोला, ''महाराज! मेरा नाम सूर्यभूपति है! आप इस जीवगुप्त को फिलहाल क्षमा करके छोड़ दीजिएगा! आप के राज्य पर हमला करनेवालों में उदयगिरि का राजा दुर्मुख भी है। इसलिए आप पहले राजधानी की रक्षा का समुचित प्रबंध करवा दीजिए।''

राजा जितकेतु दुर्मुख का नाम सुनते ही चौंक उठा, थोडी दूर पर खड़े नगर द्वार के रक्षक दल के सरदार से बोला, ''तुम इसी क्षण नगर का द्वार बंद कराकर दुश्मन से उसकी रक्षा करो! हमारे प्रधान सेनापति को मेरा यह आदेश सुनाओ कि वह तत्काल सेनाओं को इकट्ठा करके दुर्ग के बुर्ज और कंदकों की रक्षा का उचित प्रबंध करे।''

''जो आज्ञा, महाराज!'' यों कहकर दुर्ग रक्षकों का सरदार वहाँ से चल पड़ा।

इसके बाद राजा जितकेतु ने सामंत सूर्यभूपति से पूछा, ''क्या तुम उस दुर्मुख राजा को जानते हो? वह बड़ी भारी सेना लेकर आ रहा है क्या?''

सूर्यभूपति ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा, ''महाराज! मैं बहुत समय तक राजा दुर्मुख का सामंत रहा, आखिर उन्हें राज्यशासन क रने के लिए असमर्थ मानकर विद्रोह करके उनके राज्य पर अधिकार कर लिया। इस कार्य में दुर्मुख के अनेक सैनिकों ने मुझे सहयोग दिया था, मगर हाल ही में कालीवर्मा नामक एक क्षत्रिय युवक, भल्लूक मांत्रिक, भल्लूक रूप में स्थित एक व्यक्ति, जंगल के डाकू-इन सब दुष्टों ने एक साथ मेरे दुर्ग पर हमला करके मुझे अपने राज्य से भगा दिया है। उस दुर्मुख के समर्थक ये ही सब कमबख्त हैं। वैसे तो दुर्मुख के साथ कोई भारी सेना नहीं है।''

सूर्यभूपति की बातें सुन राजा जितकेतु घबरा गया और माया मर्कट से बोला, ''मर्कटामात्य! सूर्यभूपति के कथनानुसार दुश्मनों की संख्या भले

ही थोड़ी हो, पर वे बड़े ही साहसी और शक्तिशाली मालूम होते हैं! हम दुर्ग के बाहर स्थित नगर की रक्षा की बात फिर सोच लेंगे! पहले हमें इस दुर्ग को बचाने का उपाय सोचना चाहिए!''

माया मर्कट ने ये सारी बातें ध्यान से सुनीं, तब उछलकर बोला, ''हे राजा! आप दुर्ग की रक्षा के बारे में बिलकुल चिंता न करें। जानते हैं कि वह भल्लूक मांत्रिक और उसके समर्थक सब सूर्यभूपति के दुर्ग में कैसे प्रवेश कर पाये? उनके दुर्ग के द्वारों को जलाकर ही भीतर घुस पाये! इसलिए आप को सर्वप्रथम दुर्ग की रक्षा पर अधिक ध्यान देना है!''

राजा ने स्वीकार सूचक सिर हिलाकर सूर्यभूपति से कहा, ''सूर्यभूपति! आप ने अपने दुर्ग के द्वारों की रक्षा के बारे में अधिक ध्यान नहीं दिया, इसीलिए आप अपने हाथों से दुर्ग को खो बैठे! इसलिए मैं आप को अपने दुर्ग की रक्षा का भार सौंप देता हूँ। यह जिम्मेदारी आप समर्थता के साथ उठायेंगे तो मैं आप को अपना प्रथम सामंत नियुक्त करूँगा और आप का यथोचित सत्कार भी करूँगा।''

इसके प्रत्युत्तर में सूर्यभूपति बोला, ''जो आज्ञा महाराज!'' फिर वहाँ से चलने को हुआ, तभी मंत्री जीवगुप्त उच्च स्वर में बोला, ''महाराज! बताइये, अब मेरा क्या हाल है? क्या मैं अपने पद से वंचित हूँ या नहीं?''

यह सवाल सुनते ही माया मर्कट किच् किच् करते चिल्ला उठा और बोला, ''अजी पुराने मंत्री, तुम्हारी नौकरी तो कभी की छूट गई है! तुम्हारा सिर थोड़े दिन तक जरूर बचा रहेगा! तुम इसी वक़्त इस दरबार से निकल जाओ।''
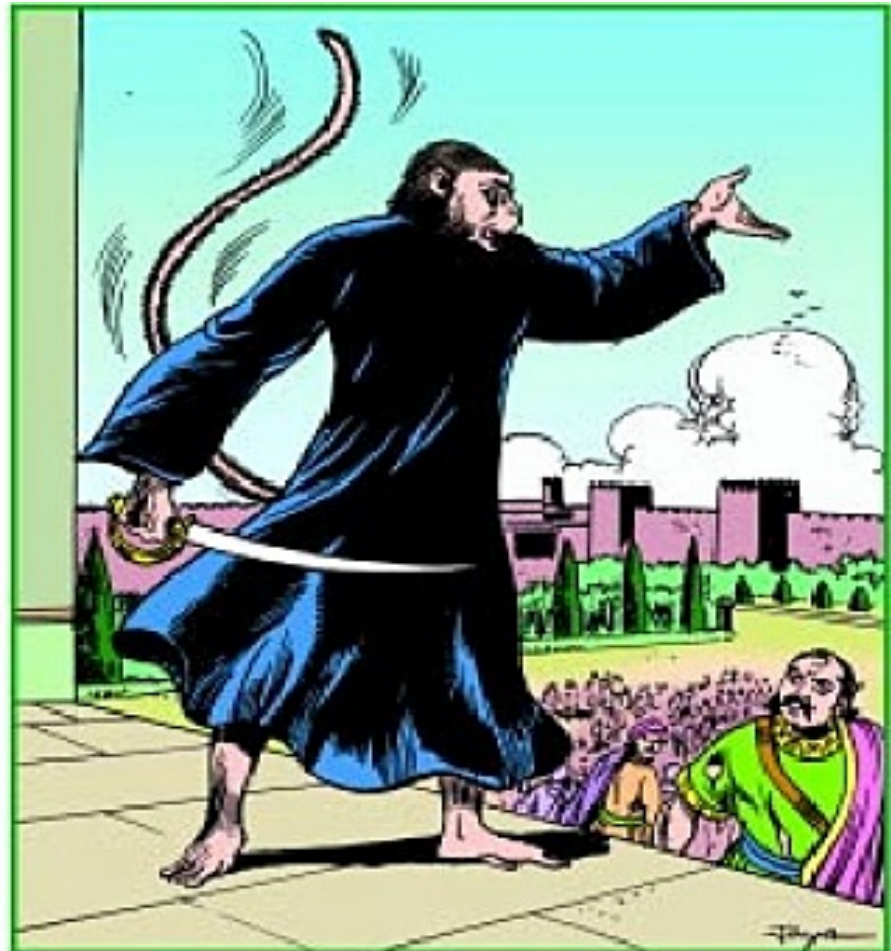
इसके बाद आगे-आगे सूर्यभूपति और उसके पीछे जीवगुप्त तथा नगर के प्रमुख व्यक्ति सभाभवन के बाहर चले गये। सभी लोग जब सभाभवन के प्रांगण में पहुँचे, तब पीछे से माया मर्कट वेग के साथ सीढ़ियों तक पहुँचा, तलवार हाथ में ले अपनी पूँछ को तेज़ी के साथ घुमाते बोला, ''मेरे मंत्रदण्ड को किसी ने चुरा लिया है! जो व्यक्ति उसे लाकर मुझे सौंप देगा उसे महाराजा अपना आधा राज्य दे देंगे और उसके साथ अपनी कन्या का विवाह भी करेंगे।''

मर्कट की बातें सुन सभी लोग आश्चर्य चकित रह गये! पर मंत्री जीवगुप्त विकट अट्टहास करके

बोला, ''यह मर्कट यह भी नहीं जानता कि राजा के एक कन्या क्या, बिलकुल संतान नहीं है!''

मंत्री के मुँह से ये बातें सुनते ही सब लोग खिल खिलाकर हँस पड़े! उसी वक़्त वहाँ पर राजा जितकेतु आ पहुँचा। माया मर्कट ने राजा की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखकर पूछा, ''हे राजा! आप भी कैसे राजा हैं? क्या आप के कोई संतान भी नहीं है?''

''मर्कटामात्य! यह बात मैं बाद में बताऊँगा ! पहले तुम यह बताओ कि तुम्हारे लिए क्या वह मंत्रदण्ड बहुत जरूरी है? क्या उसके भीतर ऐसा महत्व है? उसके विना क्या हम शत्रु राजाओं को पराजित नहीं कर सकते?''

''राजन! आप ने यह कैसा सवाल किया? जिसके हाथ में वह मंत्रदण्ड होगा, उसके लिए इस दुनिया में कोई असंभव बात न होगी। वह आप के सिंहासन की ही नहीं, आप के प्राणों की भी रक्षा कर सकता है।'' मर्कट ने उत्तर दिया।

उसी क्षण राजा जितकेतु ने हाथ उठाकर कहा, ''किसी को इस बात की शंका करने की ज़रूरत नहीं कि मेरे कोई कन्या नहीं है। पर मैं एक कन्या को गोद लेकर अपनाआधा राज्य सहितमंत्रदण्ड लानेवाले के साथ उसका विवाह कर दूँगा।''

ये बातें सुन वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों ने हर्षनाद किये। इसके पूर्व जंगली युवक के पालतू भालू का खेल देखने वहाँ पर काफी लोग जमा हो गये थे। उनमें से दो युवक बैरागियों की पोशाकें धारण किये हुए थे। वे राजा की बातें सुन पागलों की भांति उछल पड़े। उनमें से एक ने अपने झोले में हाथ रखना चाहा, पर दूसरे ने उसे मना करते हुए कहा, ''अरे, उप शिष्य! जल्दबाजी न करो! पहले अपने गुरुजी के बिचार जान लेना ज़रूरी है।'' वे दोनों बैरागी युवक वहाँ से चल पड़े।

नगर के प्रमुख नागरिकों ने राजा को सलाह दी कि मंत्रदण्ड लानेवाले युवक को दिये जानेवाले पुरस्कार के संबंध में सारे नगर में ढिंढोरा पिटवाना चाहिए। इसके बाद जब सभी लोग वहाँ से जाने को हुए, तभी एक बाण फुर्ती के साथ दुर्ग की दीवारों के ऊपर से आकर उनके बीच आ गिरा।

भीड़ में से कोई व्यक्ति उस बाण को उठाने को हुआ, तभी माया मर्कट चिल्ला उठा, ''रुक जाओ !'' तब उसने दौड़कर वह बाण अपने हाथ में लिया, उसकी जाँच करके अपने तेज दांतों से

उसे तोड़कर दूर फेंक दिया, तब बोला, ''मैंने इस बाण की जो हालत कर दी, वही हालत अपने दुश्मन की भी करने जा रहा हूँ।'' फिर उछल-कूद करते पूछा- ''मेरा मंत्रदण्ड कहाँ है?''

इस बीच एक भारी चट्टान दुर्ग की दीवारों के ऊपर से आकर राजमहल की दीवार से टकरा गई। चट्टान के प्रहार से दीवार में भारी दरार पड़ गई।

राजा जितकेतु यह नया संकट देख आपाद मस्तक कांप उठा। फिर विस्मय में आकर कहा, ''ऐसी भारी चट्टान को क़िले के बाहर से फेंक सकनेवाला कोई साधारण मानव नहीं बल्कि राक्षस होगा! मर्कटामात्य! हम मानव क्या ऐसे राक्षसों के साथ लड़ाई करके ज़िंदा रह सकते हैं?''

चट्टान के गिरते देख नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ साधारण जनता भी वहाँ से भाग खड़ी हुई । माया मर्कट राजा को हिम्मत बंधाते हुए बोला, ''हे राजा! आप चिंता न करें।ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में ऐसे महान शक्तिशाली राक्षसों को मेरे गुरु मिथ्यामिश्र ने अपने नौकर बना रखे हैं।''

फिर भी राजा घबराते हुए बोला, ''अमात्यवर! तो फिर तुम उन्हें यहाँ पर बुलवा करके मुझे और मेरे राज्य को दुश्मन के ख़तरे से बचा सकते हो?''

माया मर्कट मुस्कुराकर बोला, ''हे राजा, आप भी कैसे भोले हैं! क्या आप यह समझते हैं कि तांत्रिक सार्वभौम मेरे गुरु आप जैसे छोटे राजाओं को बचाने के लिए उस नदी की घाटी को छोड़ यहाँ पर आ जायेंगे? वे अपने मंत्र तथा तंत्रों की शक्ति के बल पर पहले इस लोक को और बाद ऊपर के लोकों को भी जीतने जा रहे हैं। लेकिन उन्हें भल्लूकपाद नामक एक तुच्छ व्यक्ति रोक रहा है। उसी का शिष्य इस वक़्त दुर्ग के बाहर आया हुआ भल्लूक मांत्रिक है।''
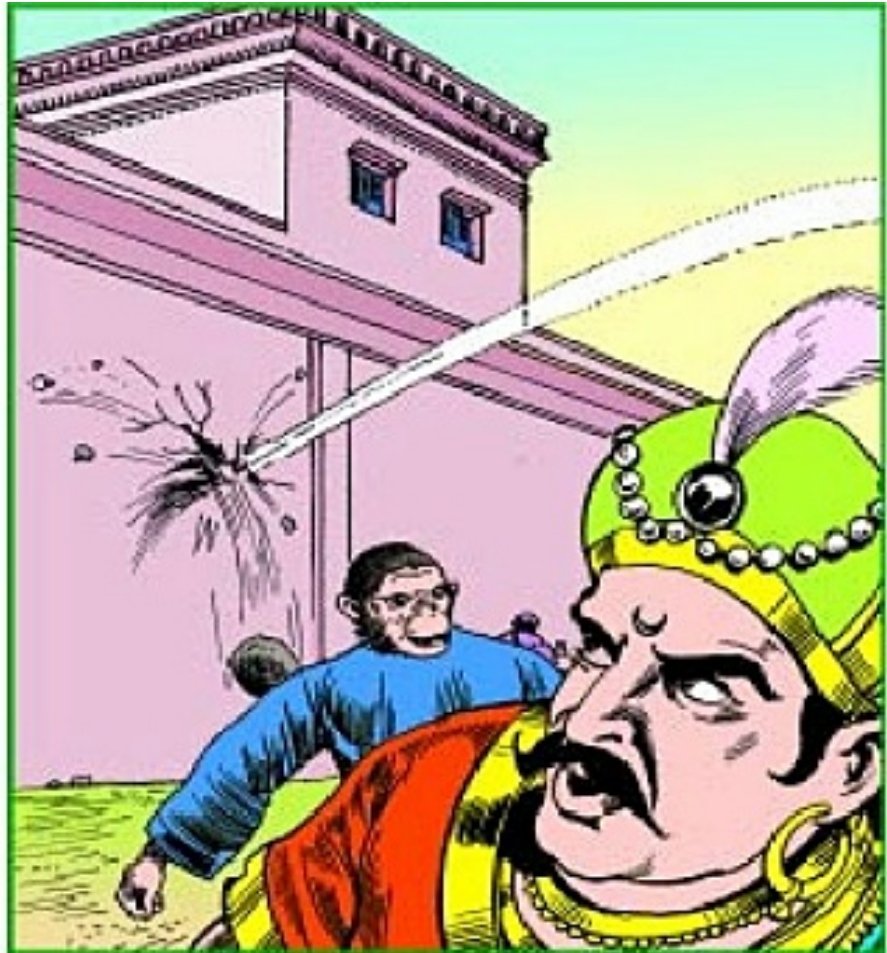
मर्कट के मुँह से ये शब्द सुनते ही राजा जितकेतु के मन में यह संदेह पैदा हुआ कि कोई दो मांत्रिक किन्हीं अपूर्व शक्तियों को पाने के लिए उसके जैसे लोगों को पासों के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि मेरे सिंहासन की रक्षा करने की अपेक्षा अपने शत्रु भल्लूक मांत्रिक का संहार करना अत्यावश्यक कार्य है। इसलिए,दुर्ग की रक्षा की जिम्मेदारी माया मर्कट को न देकर उसे स्वयं अपने ऊपर लेना ज़्यादा उपयुक्त होगा।

यों विचार क र राजा ने मर्कट से कहा, ''मर्कटामात्य! दुर्ग की दीवारों पर पहुँच कर सबसे

पहले हमें यह देखना चाहिए कि हमारा शत्रु दुर्ग से कितनी दूरी पर है! हमारे सैनिकों को भी सावधान रहने लिए हमें चेतावनी देनी है।'' यों समझाकर वह निकट के बुर्ज की ओर चल पड़ा।

माया मर्कट ''ओह! मेरा मंत्र दण्ड कहाँ?'' चिल्लाते राजा का अनुसरण करने लगा।

इसके बाद राजा जितकेतु और माया मर्कट ने दुर्ग की दीवारों पर से उसके सामने के मैदान की ओर देखा। दुर्ग के नीचे एक घोड़े पर कालीवर्मा, भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक, हाथी पर बधिक भल्लूक, राक्षस उग्रदण्ड तथा थोड़े सैनिक भी उन्हें दिखाई दिये।

उन्हें देखते ही राजा जितकेतु आपाद मस्तक कांप उठा और बोला, ''हे अमात्य! और लोगों की बात तो मैं अभी कुछ नहीं कह सकता, लेकिन उस राक्षस को देखने पर सचमुच मेरा कलेजा कांप रहा है। क्या इसे जीतना मानव मात्र के लिए संभव होगा?''

''बुजुर्गों ने बताया है कि जो मानव मात्र द्वारा संभव नहीं है, वह मंत्र साध्य है। किंतु जो मंत्र साध्य भी नहीं है, वह तंत्र साध्य है, इसे पंडितों ने बताया है। बाप रे बाप! मेरा मंत्र दण्ड कहाँ?'' यों किचकिच करते माया मर्कट उछल-कूद करने लगा।

मर्कट की आवाज़ सुनकर जंगली युवक हाथी पर उठ खड़ा हुआ, उसकी ओर बाण कनिशाना बनाकर बोला, ''अरे कमबख्त बंदर! लो, देखो, तुम्हारा मंत्र दण्ड बाण के रूप में चला आ रहा है।'' इन शब्दों के साथ उसने बाण छोड़ दिया। बाण सर्र की आवाज़ करते आकर मर्कट के घुटने पर जा लगा।

बाण की चोट खाकर माया मर्कट औंधे मुँह गिर पड़ा, परन्तु ''तांत्रिक गुरु!'' पुकारते झट उठ खड़ा हो गया, बाण को अपने दोनों हाथों से मरोड़कर खींच लिया , तब कहा, ''अ रे, इस भ्रांतिमति को तुम्हारे बाण क्या बिगाड़ सकते हैं?'' फिर उस बाण को कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक की ओर फेंक दिया और एक बार फिर किचकिच करता हुआ चीख पड़ा, ''कहाँ है मेरा मंत्रदण्ड।''

(और है)
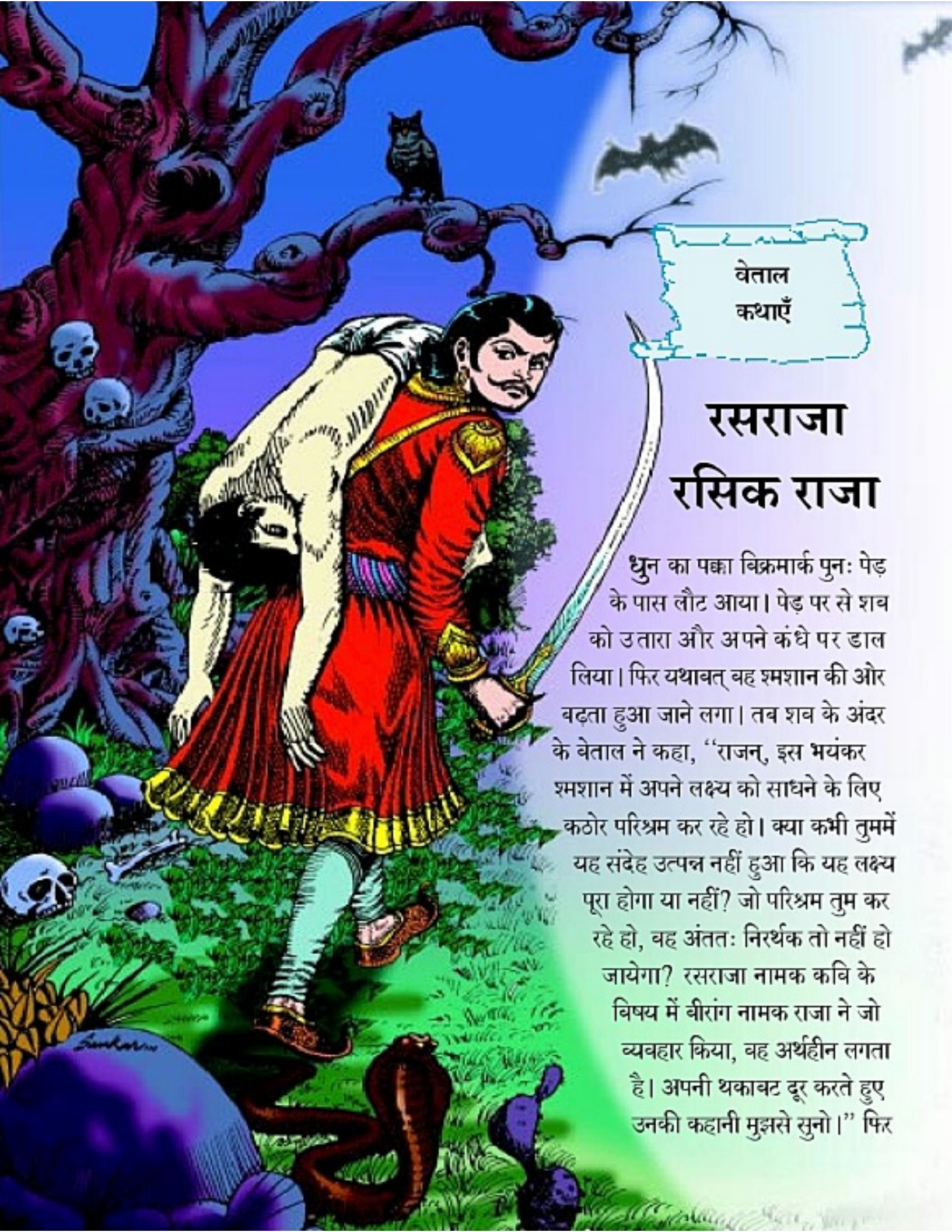
रसराजा रसिक राजा

धुन का पक्का बिक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "राजन्, इस भयंकर श्मशान में अपने लक्ष्य को साधने के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हो। क्या कभी तुममें यह संदेह उत्पन्न नहीं हुआ कि यह लक्ष्य पूरा होगा या नहीं? जो परिश्रम तुम कर रहे हो, वह अंततः निरर्थक तो नहीं हो जायेगा? रसराजा नामक कवि के विषय में बीरांग नामक राजा ने जो व्यवहार किया, वह अर्थहीन लगता है। अपनी थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी मुझसे सुनो।" फिर

बेताल उनकी कहानी यों सुनाने लगा:

बीरांग सिंधु देश का शासक था। कविता में उसकी विशेष अभिरुचि थी। अच्छी से अच्छी कविताएँ सुनने के लिए बिजयदशमी के दिन देश भर के बड़े-बड़े कवियों को अपने यहाँ निमंत्रित करता था और उनका सम्मान भी करता था।

चूँकि अच्छी और बुरी कविता के फ़र्क को वह जानता नहीं था इसलिए वह महामंत्री को आदेश देता था कि आस्थान के कवियों से परामर्श करे और निर्णय ले। सम्मानित कवियों की कविताओं को सुनते हुए राजा को लगता था कि इन कविताओं में कोई ऐसी विशिष्टता नहीं, जिसके लिए उन कवियों की प्रशंसा की जाए। आस्थान कवि भी उन कविताओं को नीरस, अपरिष्कृत व दिशाहीन ठहराते थे। इसका एक प्रबल कारण भी था। उनका समझना था कि अगर वे उत्तम कवि घोषित किये जायें तो उन्हें अपने पद से हाथ धोना पड़ेगा। इसलिए जिन कवियों को वे चुनते थे, उनकी प्रतिभा भी साधारण होती थी।

दो साल के बाद बीरांग ने महामंत्री को बुलाकर कहा, ''दिन ब दिन हमारे देश में कविता का स्तर गिरता जा रहा है। इसका कारण क्या हो सकता है?''

''प्रभु, आपने कितने ही महान काव्यों का अध्ययन किया। हमारे आस्थान कवियों से बढ़कर कवि आज हमारे देश में नहीं रहे। आपसे किये जानेवाले सम्मान नयों को ही प्रोत्साहन देते हैं, जो महान कविता को जन्म नहीं दे सकते,'' महामंत्री ने कहा।

राजा बीरांग सोच में पड़ गया। अंतःपुर में जाने के बाद इसी विषय पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए राजा ने रानी से कहा, ''सारहीन कविताओं को प्रोत्साहन देना और उन कवियों का सम्मान करना व्यर्थ है न?''

महारानी ने ''न'' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा, ''हज़ार सालों में सूर्य की कांति क्या क्षीण हो जाती है? अगर क्षीण भी हो जाए तो क्या हम यह जान पायेंगे? मेरा तो विचार है कि महान कवि सभी कालों में होते हैं। परंतु उन्हें पहचान सकनेवाले प्रभु कुछ कालों में ही होते हैं।''

रानी की बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए राजा ने कहा, ''तुम्हारी उपमा स्वयं एक महान कविता लगती है। मैं अब तक जानता ही नहीं था कि मेरी रानी इतना अच्छा बोल सकती है,

इतने अच्छे विचार रखती है। अगर मैंने देश के महान कवियों को नहीं पहचाना तो, ग़लती मेरी है। पहले मुझे तुम्हारा ही सम्मान करना होगा।''

रानी ने तुरंत कहा, ''प्रभु, मेरी बातें अगर आपको महान लग रही हों तो आपको मेरा नहीं, मेरी परिचारिका नीला का सम्मान करना चाहिये, क्योंकि ये वाक्य उसीके हैं।''

वीरांग ने और चकित होते हुए कहा, ''मेरे देश की एक परिचारिका इतने उत्तम भाव प्रकट कर सकती है, इसकी मुझे बेहद खुशी है। कहो तो सही, किस सिलसिले में उसने ये बातें कहीं।''

''दो दिन पहले मैं नीला से बात कर रही थी। उससे कह रही थी कि जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे मेरी सुंदरता क्षीण होती जा रही है। उसने यह मानने से इनकार कर दिया और कहा कि हज़ार सालों के बाद भी सूर्य का तेज क्षीण नहीं होता, अगर क्षीण भी हो जाए तो हम जैसे साधारण जनों को यह मालूम नहीं पड़ता।'' रानी ने कहा।

वीरांग ने परिचारिका नीला को बुलवाया और उसकी खूब प्रशंसा की। वह घबराती हुई बोली, ''प्रभु, कमल जन्म लेता हो तो इसका श्रेय कीचड़ को नहीं जाता। कमल यद्यपि ब्रह्मा का आसन है, पर वह सृष्टिकर्ता नहीं बन सकता। ब्रह्मा ने वेदांतों की रचना की, पर वे पूजा की योग्यता नहीं रखते। उसी प्रकार मैंने जो सूक्तियाँ बतायीं, वे मेरी नहीं हैं। एक महीने पहले रसराजा नामक एक महाकवि हमारे नगर में आये और हमारे घर में

रह रहे हैं। जो-जो सूक्तियाँ मैंने बतायीं, उन्हीं के मुँह से मैंने सुनीं।''

इन विवरणों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए राजा ने कहा, ''वे रसराजा केवल एक महाकवि ही नहीं हैं, महान पंडित भी लग रहे हैं। उनसे कहना कि मैं तुरंत उनसे मिलना चाहता हूँ।''

नीला ने, रसराजा को राजा का संदेश सुनाया। उन्होंने हँसकर कहा, 'राजा से बताना कि मुझे उनका संदेश मिल गया। मेरे कानों को जब चलना आयेगा, तब अवश्य उनसे मिलूँगा।''

नीला जब यह बात महाराज को बता रही थी, तब महारानी भी वहाँ थी। उसकी समझ में नहीं आया कि रसराजा कहना क्या चाहते हैं। तब राजा वीरांग ने रानी से कहा, ''ऐसा कहने का उनका मतलब है कि मैं स्वयं उनके पास आऊँ

और उन्हें बुलाऊँ।'' फिर उसने नीला से कहा, ''उनसे पूछकर बताना कि मैं उनसे कब मिल सकता हूँ।''

नीला ने जब रसराजा से यह बात कही तो उन्होंने कहा, ''मैं दिन भर लिखता रहता हूँ। रात में मेरे पास समय है लेकिन तब मैं लोगों को अपनी कविताएँ सुनाता हूँ । राजा से बताना कि उनसे मिलने के लिए मेरे पास समय नहीं है।''

नीला की इन बातों को सुनने के बाद राजा एकदम नाराज़ हो उठा। उसने कटु स्वर में नीला से कहा, ''उनसे बता दो कि कल ही रसराजा को मुझसे मिलना होगा।'' नीला ने यह भी रसराजा को बता दिया। थोड़ा भी विचलित हुए बिना उन्होंने कहा, ''जिन्हें मैं चाहता हूँ, उनसे मैं मिलता हूँ। इस बिषय में मुझे पूरी स्वतंत्रता है। इसके लिए मुझे सज़ा दी जाए तो यह दुष्टता है।''

राजा स्तंभित रह गया। नीला कुछ कहते-कहते रुक गयी। बीरांग ने यह भांप लिया और उससे पूछा, ''हम दोनों के बीच में तुम दूत का काम कर रही हो। कहीं तुम असुबिधा तो महसूस नहीं कर रही हो?''

नीला ने फ़ौरन कहा, ''प्रभु, ऐसी कोई बात नहीं है। आप रसिक राजा हैं। रात में रसराजा अपनी कविता सबको सुनाते हैं। उस समय बहुरूपिया बनकर वहाँ आइये और उनकी कविता सुनिये, बशर्ते आपको सही लगे?''

राजा वीरांग को नीला का यह सुझाव सही लगा। बह रात को महारानी से बताये बिना साधारण नागरिक के बेष में नीला के घर गया।

रसराजा के काव्य पठन को देखते और सुनते हुए वह मंत्र–मु ग्ध रह गया। उसे लगा कि वे निस्संदेह ही महाकबि हैं। श्रोता एक-एक करके अपने संदेहों को व्यक्तकरते थे और रसराजा बड़ी ही दक्षता के साथ उनके संदेहों की निवृत्ति करते थे। राजा ने जान लिया कि यह व्यक्ति असाधारण पंडित भी है। अपने संदेहोंको दूर करने के उद्देश्य से राजा खड़ा हो गया, पर उसकी समझ में नहीं आया कि पहले क्या पूछा जाए।

तब रसराजा ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा, ''सत्यान्वेषण के लिए संकोच करना नहीं चाहिये। अपना संदेह निस्संकोच व्यक्त करो।''

''हमारे राजा वीरांग ने उत्तम कवियों के सम्मान की प्रथा शुरू की। आपकी कविता व

पांडित्य असामान्य हैं। फिर भी, आपको राजा का सम्मान उपलब्ध नहीं हुआ। क्या आप इसका कारण बता सकते हैं?'' राजा ने पूछा।

''राजा ने सोचा होगा कि मेरी कविता और पांडित्य राज सम्मान पाने के योग्य नहीं हैं,'' रसराजा ने कहा।

''हमारे राजा ने आपकी कविता सुनी नहीं होगी। आप एक बार राजा से मिलेंगे तो अच्छा होगा।'' वीरांग ने कहा।

रसराजा ने हँसते हुए कहा, ''सम्मान पाने की इच्छा मुझमें पैदा होती तो अवश्य राजा के पास जाता और उनसे कहता, ''महाराज, मेरा सम्मान कीजिये, पर अब तो राजा ही मेरा सम्मान करने के लिए उतावले हैं। इसलिए, अच्छा यही होगा कि खुद आयें और अपनी इच्छा प्रकट करें।''

रसराजा की बातें सुनकर वहाँ उपस्थित सब लोग हँस पड़े। वीरांग का चेहरा विवर्णहो गया। उसने धीमे स्वर में कहा, ''शासक कितने ही कामों में फंसे हुए होते हैं। आप ही का उनके पास जाना न्यायसंगत और उचित होगा।''

''ऐसे व्यस्त राजा कैसे जान पायेंगे कि कौन उत्तम कवि है?'' रसराजा ने पूछा।

''यह जिम्मेदारी संभालने के लिए महामंत्री और आस्थान कवि मौजूद हैं। आप उनसे मिलिये।'' वीरांग ने सलाह दी।

रसराजा ने पुनः हँसते हुए कहा, ''आपके कहने का यह मतलब हुआ कि मैं खुद जाकर उनसे मिलूँ और कहूँ कि महोदय, मैं उत्तम कवि

हूँ, मेरा सम्मान कीजिये। ऐसी स्थिति में मैं कवि नाम मात्र के लिए हूँ, उत्तम कवि नहीं हूँ। किसी से मांगकर लेना दान कहलाता है। हमारे राजा सम्मान को दान के रूप में दे रहे हैं।''

वीरांग कुछ कहे बिना वहाँ से चुपचाप चला गया। दूसरे दिन उसने महामंत्री से कहा, ''सुना है कि महारानी की परिचारिका नीला के घर में रसराजा नामक एक महाकवि अतिथि बनकर रह रहे हैं। आप और आस्थान कवि जाकर उनसे मिलिये और उनकी प्रतिभा के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करके आइये।''

महामंत्री और आस्थान कवियों ने राजा की आज्ञा का पालन किया। लौटने के बाद महामंत्री ने राजा से मिलकर कहा, ''प्रभु, हमारे आस्थान कवियों का मानना है कि रसराजा की कविता में

कोई शक्ति नहीं है, वह सारहीन है। वह सर्वथा राज सम्मान के लिए अयोग्य है।''

महामंत्री की बातों ने वीरांग को क्रोधित कर दिया, पर अपने क्रोध को प्रकट न करते हुए कहा, ''रसराजा की कविता मैंने स्वयं सुनी और मैं मंत्रमुग्ध हो गया।'' फिर जो हुआ, उसने सविस्तार बताया। शर्म के मारे सब आस्थान कवियों ने सिर झुका लिया और क्षमा मांगी।

राजा ने मंत्री को इस प्रकार देखा, मानों वह जानता चाहता हो कि ऐसा क्यों हुआ। तब मंत्री ने विनयपूर्वक कहा, ''प्रभु, मैंने सदा आस्थान कवियों के अभिप्रायों पर विश्वास किया। मैं ताड़ नहीं पाया कि वे इतने स्वार्थी हैं।''

मंत्री की बातों से शांत राजा जब अंतःपुर में प्रवेश कर रहा था तब परिचारिका नीला महारानी से कह रही थी, ''महारानी, रसराजा कवि, महाराज के दर्शन करना चाहते हैं। वे मेरे द्वारा इसके लिए महाराज की अनुमति मांग रहे हैं।'' राजा ने नीला की ये बातें सुनीं और उससे कहा, ''मैं स्वयं आकर उनसे मिलूँगा और उन्हें आमंत्रित करूँगा।''

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन, यह स्पष्ट है कि कवि रसराजा आवश्यकता से अधिक अहंभावी है। मानता हूँ कि वह सर्वथा सम्मान के योग्य है, पर इसके लिए उसका चयन नहीं हुआ, यह ग़लती हो सकती है। पर स्वयं जाकर उसे आमंत्रित करने के पीछे राजा का उद्देश्य क्या है? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''रसराजा स्वाभिमानी है न कि दुरहंकारी। उसकी इच्छा यही थी कि आस्थान कवियों के कुतंत्रों का पर्दाफाश हो और राजा उनकी असलियत को जानें। रसराजा ने ठीक ही कहा, सम्मान का अर्थ दान नहीं है, वह एक गौरव है। इस वास्तविकता को राजा अंतिम क्षणों में ही समझ पाये, इसीलिए राजा ने स्वयं उन्हें आमंत्रित करने का निर्णय लिया। वीरांग केवल राजा ही नहीं बल्कि रसिकराजा हैं।''

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार ''वसुंधरा'' की रचना)

जूडो की जड़ केरल में

कलारीपयत्तु केरल की युद्धकला के रूप में प्रसिद्ध है. लेकिन इसका प्रभाव और इसके कुछ तत्वों को राज्य की अनेक नृत्य और नाट्य शैलियों में, जिनमें केरल की शास्त्रीय नाट्य शैली कथकली भी शामिल है, देखा जा सकता है। जिन नृत्य शैलियों में कलारीपयत्तु के तत्व देखे जाते हैं, वे हैं– कोलॅकली, बेलॅकली तथा यात्राकली। यह बड़ी रोचक बात है किएक बौद्ध भिक्षु बोधिधर्मा इस कलारीपयत्तु कला को पाँचवीं शताब्दी में चीन ले गया। इस कला को सिखाने के लिए उसने शावोलिन मन्दिर चुना। कालक्रम में कलारीपयत्तु ने जूडो, कराटे तथा कुंग-फु जैसी युद्धकलाओं को जन्म दिया।

एक और सिकन्दर

हम सब यूनानी विजेता के बारे में जानते हैं जिसने ईसापूर्व ३२७ ईसवी में भारत पर आक्रमण किया था। एक हजार साल बाद भारत का एक शासक अपने को दूसरा सिकन्दर मानता था। वह था खलजी वंश का खलजी सुलतान, जिसने दिल्ली से ईसवी सन् १२९० से राज्य किया। तीसरा खलजी, सुलतान अलाद्दीन सबसे अधिक योग्य था। उसने गुजरात और मालवा के हिन्दू राज्यों को लूट लिया और चित्तौड़ तथा रण थम्भौर किलाओं पर अधिकार कर लिया। उसकी सैनिक सफलताओं ने सुलतान अलाद्दीन को इस्कन्दर-ए-शान की उपाधि ग्रहण करने और इस उपाधि के साथ स्वर्ण मुद्रा चलाने की प्रेरणा दी।

अन्य देशों (बेबीलोन) की अनुश्रुत कथाएँ

देवता बहुत खाते थे

राजा के महल के पीछे एक पहाड़ी थी और पहाड़ी के शिखर पर राज्य का मुख्य मन्दिर स्थित था। ऐसा विश्वास किया जाता था कि मन्दिर के आराध्य देव जाग्रत हैं, इतने जीवन्त किवे अर्पित खाद्य पदार्थ सचमुच खा जाते थे। मन्दिर के मुख्य पुजारी ने राजा को कह रखा था कि देवता दूसरों के सामने खाने में शरमाते हैं। इसलिए संध्याकाल के दैनिक अनुष्ठान सम्पन्न होने के पश्चात ही स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ उनके सामने रखे जाते थे। इसके बाद मन्दिर के द्वार सुरक्षापूर्वक पुजारी द्वारा बन्द कर दिये जाते थे। प्रातःकाल भक्तों के आगमन से पूर्व, जिनमें प्रायः राज परिवार के सदस्य तथा यदा कदा राजा स्वयं भी होते थे, पुजारी द्वार खोल दिया करता था। और देखिये चमत्कार! कि सूर्य की प्रथम किरणों के प्रकाश में थालियाँ खाली दिखाई पड़ती थीं। देवता ने सब खा लिया होगा। जो पदार्थ स्वादिष्ट नहीं होते थे, वे निस्सन्देह स्पर्श तो कर लिये जाते होंगे, पर बिना खाये छोड़ दिये जाते थे। लोग इस बात पर सहमत थे कि देवता की रुचि परिष्कृत है।

राजा की पाकशाला में देवता के भोजन तैयार करने के लिए एक विशेष बिभाग था। भोजन का अधिक भाग वहीं से जाता था। शेष, कुलीन परिवारों और जन साधारण द्वारा अर्पित किया जाता था।

इस चमत्कार को देखने के लिए दूसरे राज्यों के राजकीय अतिथियों तथा अन्य राजाओं के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। वे बहु त प्रभावित हुए। ''राजा कितना भाग्यशाली है, जिसके पास एक जाग्रह देवता निवास करते हैं।'' वे प्रायः कहते।

कभी-कभी मुख्य पुजारी राजा से यह कहने जाता था कि देवता ने कुछ विशेष पकवानों की माँग की है। राजा तब पाकशाला के कर्मचारियों को मांग पूरी करने का आदेश देते थे और बड़ी सावधानी से उसका पालन किया जाता था।

एक दिन डेनियल नामक एक ज्ञानी व्यक्ति के साथ जब राजा बैठे थे तब मुख्य पुजारी ने राजा के पास आकर उनसे एकान्त में कुछ बात करने की इच्छा प्रकट की। लेकिन राजा डेनियल की बातचीत को इतनी रुचि के साथ सुन रहे थे कि वहाँ से उठ कर अपने व्यक्तिगत कक्ष में जाने की उनकी इच्छा नहीं हुई। ''जो कहना है, यहीं कहो। ये सज्जन विश्वासपात्र हैं। तुम जो कुछ कहोगे, वे प्रकट नहीं करेंगे।'' राजा ने कहा। लेकिन मुख्य पुजारी अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने बल देकर कहा कि वह एकान्त में ही बात करेगा। राजा अनिच्छापूर्वक अपने व्यक्तिगत कक्ष में गये और थोड़ी देर में डेनियल के पास लौट आये। बल्कि वे कुछ नाराज से लगे। ''पुजारी की बात ऐसी कोई खास नहीं थी कि हम लोगों की बातचीत को भंग करना जरूरी हो! ठीक है, ठीक...''

''महाराज, यदि वह कोई खास बात नहीं थी तो क्या उसे मुझे बताने में बुरा तो नहीं मानेंगे?'' डेनियल ने कहा।

''आज रात को देवता हररोज से दुगुना आहार लेना चाहते हैं और कुछ विशिष्ट पकवान भी। बस!'' राजा ने कहा।

''वास्तव में मैं ने इसी बात की आशा की थी।'' डेनियल ने जोर से हँसते हुए कहा।

''आप को इसकी जानकारी कैसे थी?'' राजा ने चकित होकर पूछा। राजा जानता था कि डेनियल में सत्य के सही अनुमान करने की अलौकिक क्षमता है, लेकिन फिर भी उसे यह विश्वास नहीं था कि पुजारी के मन की बात को भी बता देगा।

''प्रभु, अच्छा होगा कि मैं सच्चाई को जो मैं जानता हूँ प्रकट न करूँ और इसके लिए मुझे क्षमा कर दिया जाये, क्योंकि इससे आप और अन्य हजारों लोग परेशान हो जायेंगे।'' डेनियल ने विनती की। लेकिन इससे राजा और भी उत्सुक हो उठा। अन्त में डेनियल ने कहा कि वह इस शर्त पर राजा की उत्सुकता को सुबह सन्तुष्ट करेगा कि उसे उस रात को मन्दिर का द्वार बन्द करने के पूर्व देवता की प्रतिमा के चारों ओर तीन बार परिक्रमा करने की अनुमति दी जाये। राजा के पास उसे इनकार करने का कोई कारण नहीं था।

पुजारी इस बात से बिलकुल प्रसन्न नहीं था कि डेनियल को अन्धेरे में देवप्रतिमा के चारों ओर जाने की अनुमति दी जाये। लेकिन जब राजा ने स्वयं अपने अतिथि को ऐसा करने की स्वीकृति दे दी तब वह कर भी क्या सकता था!

उस शाम को मन्दिर के द्वार पर राजा और डेनियल की उपस्थिति में ताला लगा दिया गया। ''मैं आशा करता हूँ कि देवता उन विशिष्ट पकवानों को स्वाद लेकर खायेंगे जिनकी उन्होंने माँग की थी। उन्हें मेरे व्यक्तिगत पाकशास्त्री ने जो दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पाकशास्त्री है, तैयार किया है। वास्तव में, मैं कुछ उन पकवानों से वंचित रह गया जिन्हें मैं अपने बावर्ची से अपने लिए बनवाना चाहता था, क्योंकि वह पाकशाला के देवता वाले विभाग में व्यस्त हो गया।'' राजा ने कहा।

''सचमुच यह बड़ी दयनीय बात है, प्रभु, कि आपने पुजारी और उसके अतिथियों के लिए अपनी रुचि के भोजन का बलिदान कर दिया।'' डेनियल ने टिप्पणी की।

''ऐसा मालूम होता है कि कभी-कभी ज्ञानी व्यक्ति भी मेरे वक्तव्य को नहीं समझ पाते । मैंने अपने बावर्ची को रसोईघर के दूसरे विभाग में व्यस्त रहने के लिए पुजारी या उसके अतिथियों के लिए नहीं, बल्कि देवता के लिए कहा था।'' राजा ने कहा। डेनियल हँस पड़ा। इससे राजा के तेवर चढ़ गये।

दूसरे दिन की सुनहली सुबह में राजा, डेनियल तथा कुछ उत्सुक दरबारियों की भीड़ के समक्ष मन्दिर के द्वार का ताला खोला गया। जैसी कि उम्मीद थी, देवता के लिए तैयार किये गये विशिष्ट पकवान बिलकुल साफ गायब थे, यद्यपि कुछ भक्त दरबारियों द्वारा निवेदित कुछ अन्य पदार्थ आधा छोड़ दिये गये थे। जिन दरबारियों ने उन पकवानों को भेजा था, उन्होंने दुख के साथ कहा, ''हम कितने अभागे हैं कि देवता को हमारा निवेदित पदार्थ अच्छा नहीं लगा।''

डेनियल एक बार फिर हँस पड़ा।

''देखो मेरे दोस्त, या तो तुम अपने कथन और विचित्र व्यवहार का स्पष्टीकरण दो अथवा दण्ड के लिए तैयार हो जाओ।'' राजा ने कठोर शब्दों में कहा।

''प्रभु, क्या आप को विश्वास है कि पत्थर के देवता ने यह सब खाया होगा? क्या आप को विश्वास है कि इस प्रतिमा में यदि कोई देवता है

तो उसमें हम मनुष्यों के समान लालच होगा और लोगों द्वारा अपनी इच्छा से अर्पित भोजन से अधिक की वह माँग करेगा?'' डेनियल ने पूछा।

''डेनियल, क्या तुम अन्धे हो? क्या देखते नहीं कि देवता को जो कुछ अच्छा लगा वे खा गये! उन्हें अपमानित करने का तुमने कैसे साहस किया?'' राजा ने पूछा।

''मेरे प्रभु, मैं देवता का अपमान नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उन लोगों पर उंगली उठा रहा हूँ जो देवता के नाम पर धोखेबाजी करते हैं। कृपया इस मोमबत्ती को पकड़िये और मेरे पीछे-पीछे आइये, क्योंकि प्रतिमा के पीछे के भाग में अभी भी अन्धेरा है।'' डेनियल राजा को देवता के मंच के दूसरे भाग में ले गया और उन्हें, फर्श पर की राख की पतली सतह पर अंकित अनेक पदचिह्नों को, सावधानी से देखने के लिए कहा। उन चिह्नों का अनुगमन करते हुए वे मन्दिर के सबसे अन्धेरे कोने में पहुँचे जहाँ एक गुप्त निकास था, जो पत्थर के रंग के एक हल्के आवरण स` बन्द किया हुआ था। उसके पीछे पुजारी का घर था।

''इन सब का अर्थ क्या है?'' राजा ने पूछा।

''प्रभु, हर रात पुजारी और उसके परिवार के सदस्य मन्दिर में जाकर नैवेद्य खाते रहे। मैं जानता था कि कल पुजारी के कुछ घनिष्ठ अतिथि आये हैं - उसकी बहू के माता-पिता। स्वभावतः मात्रा में अधिक और विशेष प्रकार के भी भोजन की जरूरत होगी। संध्या समय प्रतिमा की परिक्रमा करते हुए मैंने फर्श कर राख फैला दी थी। आपने जो पदचिह्न देखे वे पुजारी और उसके परिवार तथा अतिथियों के थे।'' डेनियल ने स्पष्ट किया।

राजा भौचक रह गया। उसने तुरन्त पुजारी को कारागार में भेजने का आदेश दिया। ''हे भगवान! देवता के नाम पर ऐसा प्रपंच कैसे होता रहा?'' राजा ने चकित होकर कहा।

''प्रभु, भगवान मूर्खों और दुष्टों के हाथों हम मनुष्य जाति की अपेक्षा अनन्त गुना अधिक कष्ट झेलते हैं और वह भी उनके अपने ही कारणों से, जिन्हें हम नहीं समझ सकते। इसके बावजूद, एक दिन सच्चाई प्रकाश में आ ही जाती है।'' डेनियल ने कहा।

(एम.डी.)

समाचार झलक

प्रतिमा को सुरक्षा

चारों ओर से सागर की लहरों से टकराती जिस शिला पर स्वामी विवेकानन्द ने अकेले बैठ कर ध्यान किया था, अब वहाँ पर कन्याकुमारी तट से हट कर विवेकानन्द शिला स्मारक है। विवेकानन्द शिला के निकट एक दूसरी शिला है जिस पर तमिलनाडु सरकार ने अति सम्मानित 'तिरुक्कुरल' के लेखक कवि-सन्त तिरुवल्लुवर की प्रतिमा का निर्माण किया है । हाल में इस पाँच वर्ष पुरानी तथा १३३ फुट ऊँची प्रतिमा की प्रकृति द्वारा विध्वंस से रक्षा के लिए उस पर पोलि-सिलिकन कोटिंग देने का निश्चय किया गया। सताइस लाख की लागत पर किया गया कोटिंग का यह कार्य चार महीनों में पूरा कर लिया गया है। अब प्रतिमा पर्यटकों के दर्शनार्थ खोल दी गई है।

३८ वीं बार

क्या तुमने स्कॉटिश हीरो रॉबर्ट ब्रूस की कहानी नहीं पढ़ी जिसे अंग्रेजों द्वारा सात बार मुँहकी खानी पड़ी और जिसने अध्यवसाय एक मकड़े से सीखा था जो एक गुफा में अपना जाल बुनने की चेष्टा कर रहा था। तुम चाहो तो राजस्थान के शिव धवन यादव को आधुनिक रॉबर्ट ब्रूस कह सकते हो। उसने दसवीं कक्षा की परीक्षा ३७ बार दी और हर बार वह असफल रहा। अब वह एक बार फिर इस वर्ष मार्च-अप्रैल में परीक्षा देने की तैयारी कर रहा है। पहली बार वह १८ वर्ष की आयु में दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में शामिल हुआ था। उसके माता-पिता को उसकी सफलता पर पूरा विश्वास था, इसलिए वे उसका विवाह तय करते रहे। अब वह ५६ वर्ष का है और अभी तक अविवाहित है।

THE ADVENTURES OF
G-man
एंड्रोमेनिया - १
भाग - १
प्रस्तुतकर्ता
Parle-G
POWER SUPPLY
Visit: www.parleproducts.com
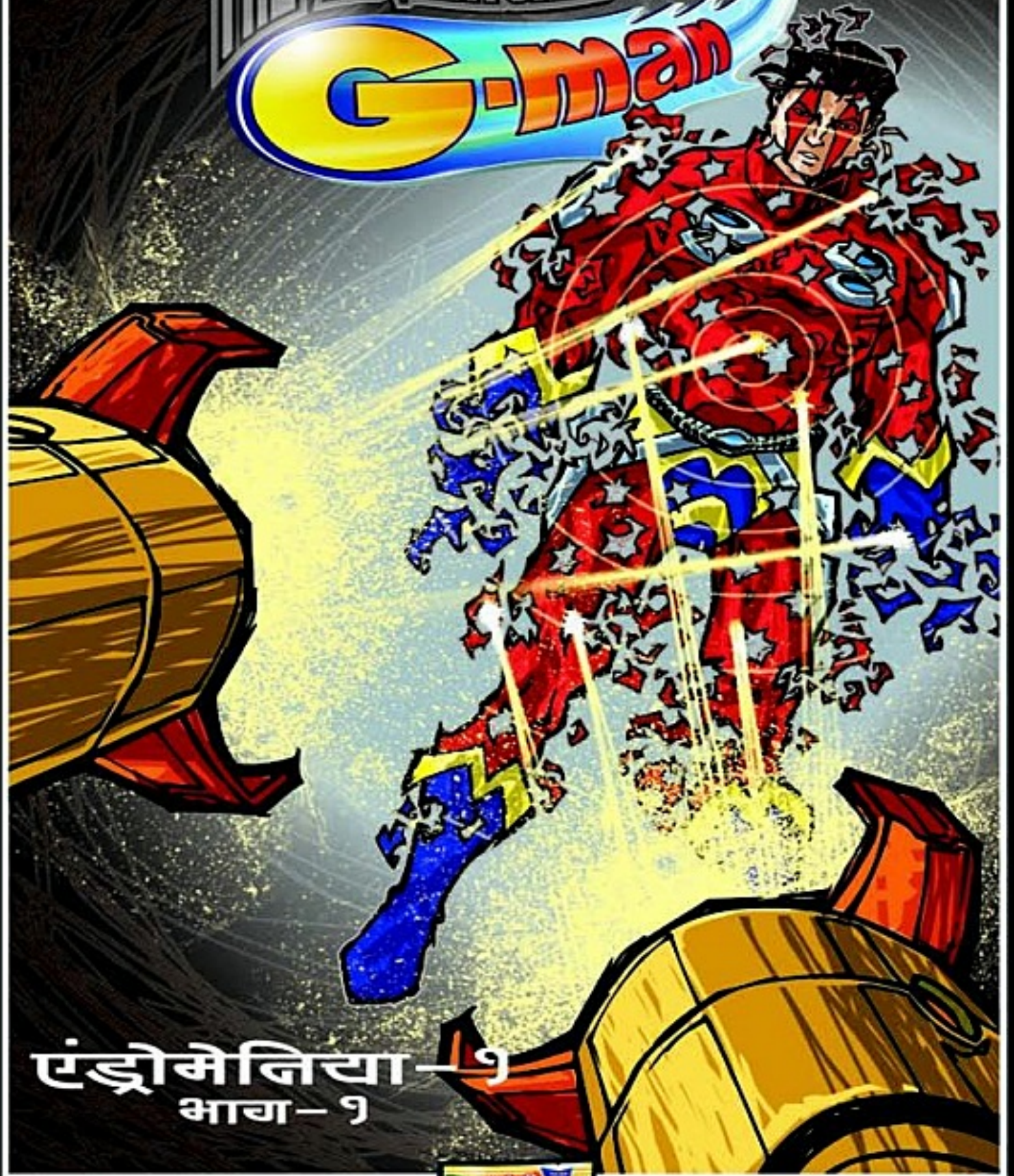
सेंट थॉमस हाई स्कूल में एक दिन...

मेजर सूर्यराज स्टाफ़ रूम से पी. टी. क्लास के लिए निकल ही रहा था...

कि अचानक...

BLIP

BLIP

कोई प्रॉब्लम?

अ...नहीं... ये बस... यूं ही.

लगता है जी-मैन को तैयार हो जाना चाहिए.

इसी दौरान, दूर कहीं...
टैरोलीन बना रहा था कुछ ऐसी विध्वंसक मशीनें...
...जो एक साथ कइयों की जान ले लेती हैं।
वो बना रहा था ख़तरनाक एंड्रॉइड्स, जिसमें है इतनी घातक शक्ति कि वो दुनिया की सबसे शक्तिशाली आर्मी पर भी भारी पड़े।
तो जी-मैन ये थी अब तक की ख़बर। आगे आप ख़ुद ही समझ जाओ।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com
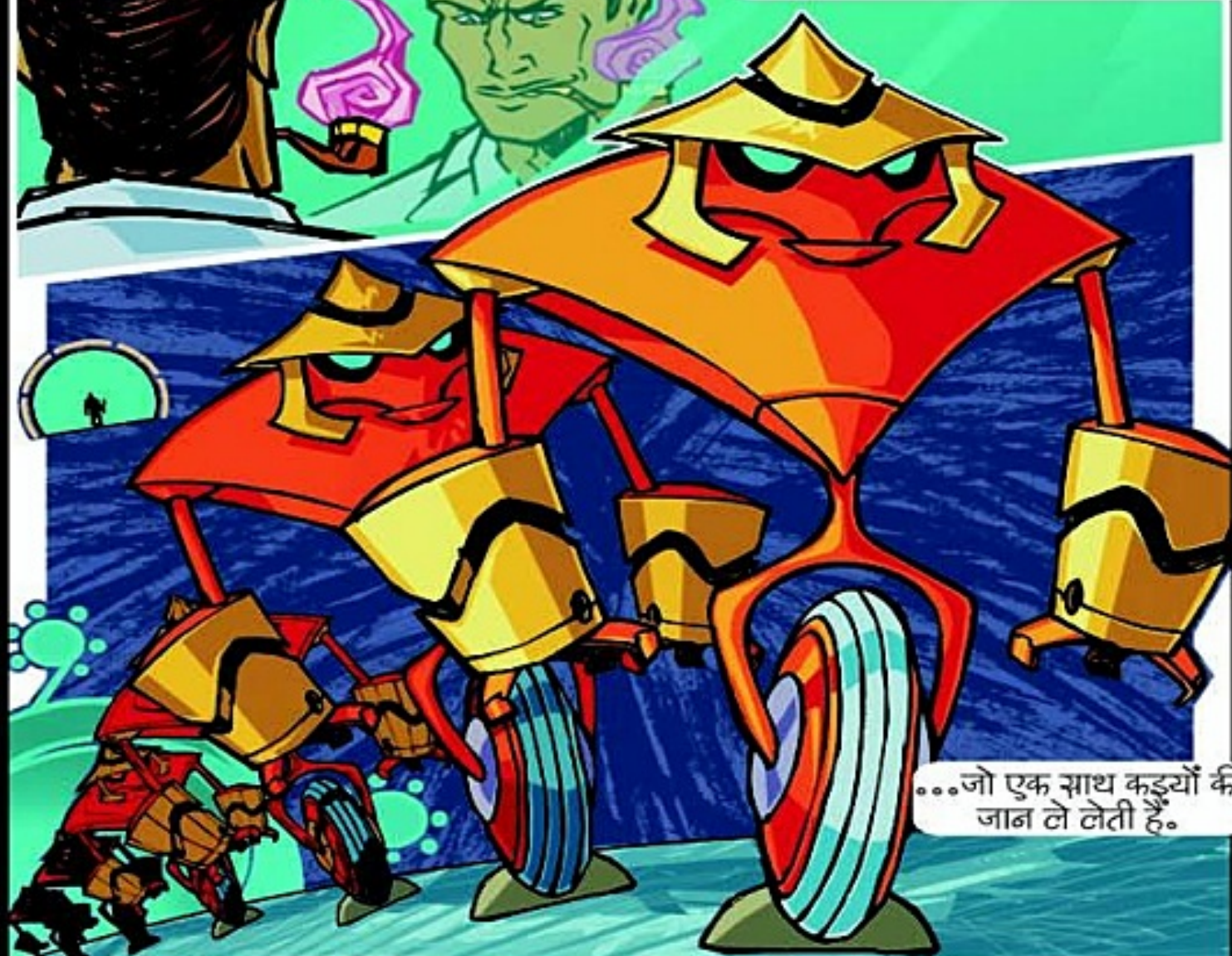
हाँ मुझे पता है। टैरोलीन को अपनी हार पसंद नहीं और मुझे यूं स्कूल से बार-बार छुट्टी लेना।

सूर्यराज अपना मनपसंद बिस्किट **पारले-जी** खाता है। इससे उसे एनर्जी मिलती है। ऐसा कहते हैं कि जी-मैन बनने से पहले सूर्यराज पलभर के लिए सूरज की रोशनी को अपने अंदर समेट लेता है शायद इसीलिए कुछ क्षण के लिए अंधेरा हो जाता है? और कोई भी इस परिवर्तन को देख नहीं पाता।

PARLE-G POWER SUPPLY

G-man

दुष्टों का विनाशक
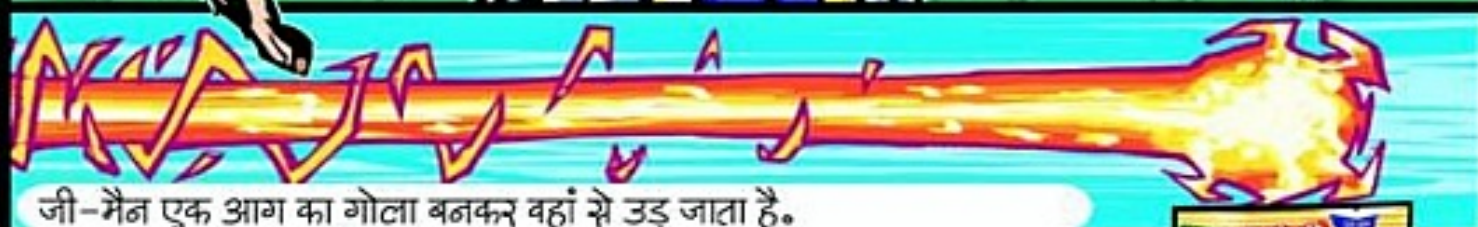
अच्छा, तो उस टावर के ३०० मील नीचे उसकी गुप्त सेना है।

पर गुपचुप तरीक़े से वहां पहुंचू कैसे?

इस लाल ड्रेस में तो मैं आसानी से पहचान लिया जाऊंगा।

सूरज के डूबने का इंतज़ार करता हूं।

सूरज के डूबते ही...
प्रकाश की गति से वो चक्रव्यूह को तोड़ देता है।
जी-मैन पहुंचता है टैरोलीन के अड्डे पर जहां उसका स्वागत करता है २४ इंच मोटा स्टील का दरवाज़ा।
अब तो जी-पावर दिखाना ही होगा।
KABOOM
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

कोई नज़र नहीं आ रहा है।
आओ जी-मैन, बड़ी देर लगा दी? तुम्हारे ऑर्ब ने मेरा ठिकाना तो तुम्हें ठीक-ठाक बताया था न! हा, हा, हा...

देर से लेकिन दुरुस्त आया दोस्त। वैसे तुम भी जानते हो कि किसी को इंतज़ार करवाना मुझे पसंद नहीं।
बहुत अच्छे... तो फिर मेरे यंत्रों को क्यों इंतज़ार करवा रहे हो।
ज़रा बताओ तो इनकी बनावट में कोई कमी तो नहीं रह गई।
ज़रूर टैरोलीन!
ये तो किसी भी काम के नहीं। हां, इनसे तुम कबाड़ का बिज़नेस ज़रूर शुरू कर सकते हो।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

क्या जी-मैन अकेले उन एंड्रॉइड्स का नाश कर पाएगा?
जानने के लिए पढ़िए एंड्रोमेनिया- २ का धमाकेदार अंक।

PARLE

१. ग्लुग्गा____________________छिपा था.
- क. ड्रेन पाइप में
- ख. पानी की टंकी में
- ग. स्कूल की बिल्डिंग में

२. बच्चों के विचारों को चुराने के लिए न्यूराल________________ का इस्तेमाल करता था.
- क. माइंड रेडर
- ख. ड्रीम मशीन
- ग. माइंड कंट्रोल

३. जी-मैन न्यूराल से____________________ लड़ रहा था
- क. मन में
- ख. शरीर में
- ग. अंतरिक्ष में

४. जी-मैन ने ग्लुग्गा को हराकर_______ बना दिया.
- क. भाप
- ख. पानी
- ग. बर्फ़

५. न्यूराल की मशीन गुप्त ढंग से _________स्थित थी.
- क. गुफ़ा में
- ख. गोदाम में
- ग. स्कूल में

६. ग्लुग्गा____________के तत्वों से मिलकर बना था.
- क. पौधे
- ख. वायरस
- ग. एलियन

१. ख २. क ३. क ४. क ५. ख ६. ग

PARLE

CROSSWORD
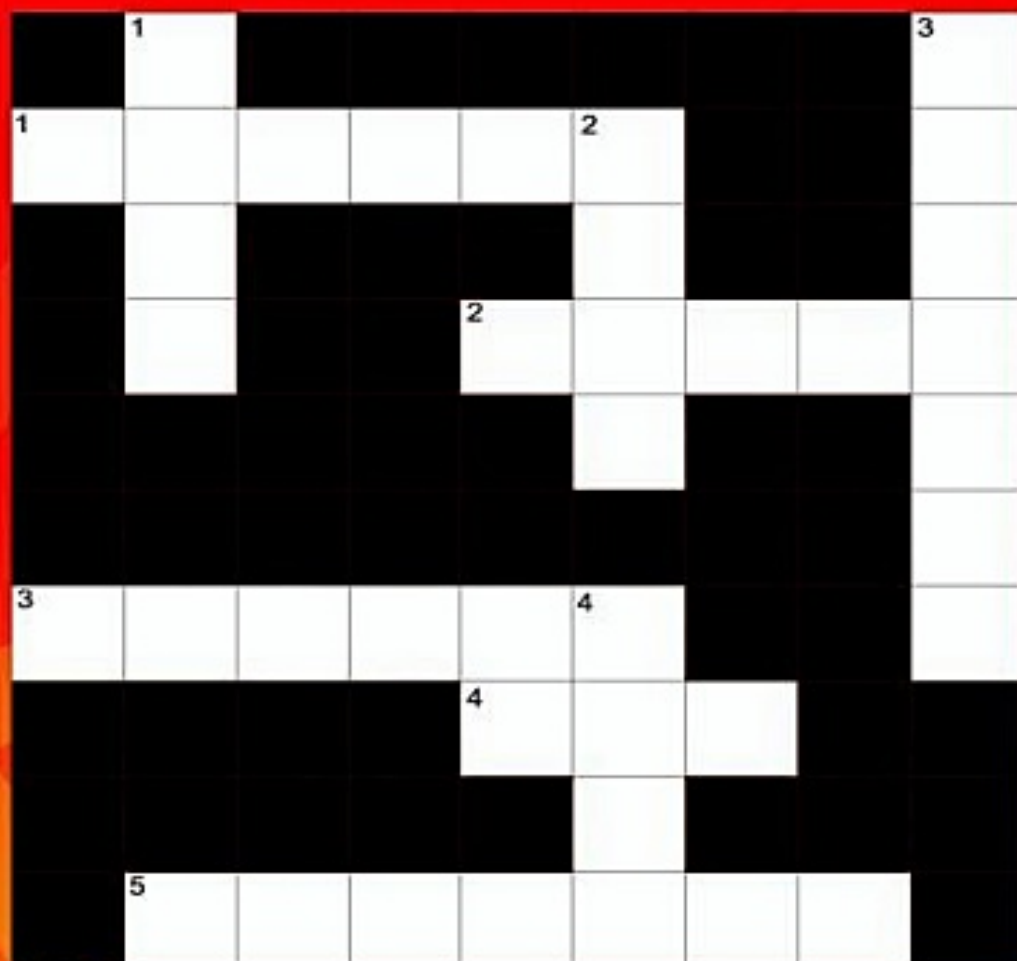
Across
1. G-man's Power Supply
2. ______ Suryaraj
3. The Water Monster's real name
4. The alien being that guides G-man
5. The island on which Terrolene's Childotron is kept

Down
1. The Water Monster's hiding place
2. Terrolene's biggest enemy
3. The inventor of the Mind Raider
4. Suryaraj fought in the Indian _____
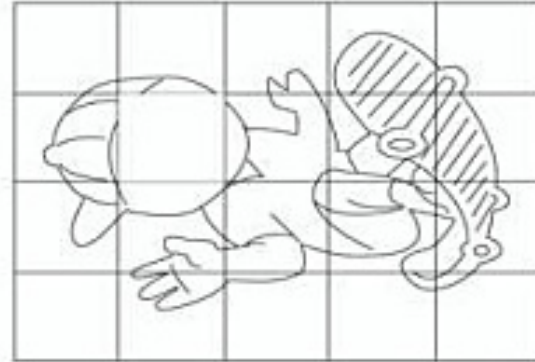
बुद्धिमती बहू

रामनाथपुरम के एक धनी व्यापारी ने अपने बेटे का नाम भाग्यनाथन इस आशा से रखा कि वह एक दिन उसके धन का वारिस बनेगा। लेकिन वह गोबर गणेश निकल गया। वह लड़का अपने दोस्तों के साथ बाहर जाकर हमेशा खेलता रहता, जो मुँह पर तो चिकनी-चुपड़ी बातें बनाते और पीठ पीछे उसे मूर्ख कहते।

व्यापारी का उदास और दुखी होना स्वाभाविक था। ''यह आशा करना बेकार है कि भाग्य हमारे वृद्ध हो जाने तक कुछ बन पायेगा'', उसने एक दिन अपनी पत्नी से कहा।

''लेकिन आपने भी तो व्यापार में उसकी रुचि पैदा करने का कोई कष्ट नहीं उठाया'', उसकी पत्नी ने जवाब दिया। रात्रि भोजन के समय व्यापारी ने अपने बेटे से कड़े शब्दमें कहा, ''देख भाग्य, कल से तुम मेरे साथ दुकान पर जाओगे। मेर जीते जी व्यापार सीख लो ताके मेरे जाने के बाद इसे संभाल सको।''

दूसरे दिन भाग्य अपने पिता के साथ दुकान पर आ तो गया लेकिन अधिकांश समय नौकरों अथवा ग्राहकों से गप्प करने में लगा रहा। उसके अगले दिन दुकान पर बहुत भीड़ थी। भाग्य किसी के साथ चला गया और कुछ देर के बाद लौटा। तीसरे दिन भी वह बाहर चला गया और दिन भर वापस नहीं आया।

कुछ दिनों के बाद भाग्य की माँ एक प्रस्ताव लेकर आई, ''हमलोग उसका विवाह कर देते हैं, तब वह दिन भर घर ही पर रहेगा और जिम्मेदार भी बन जायेगा।''

व्यापारी को आश्चर्य हुआ, लेकिन उसने यह मान लेने का निश्चय किया। ''लेकिन उसे एक और मौका मिलना चाहिये, पर साथ में उसके

लिए बहू भी ढूँढ़ते रहो,'' उसने कहा, ''कल उसे तीन रुपये दे दो और कहो कि एक रुपये का कुछ लेकर खा ले, एक रुपया नदी में फेंक दे और बाकी एक रुपये से कुछ खाने, पीने, बोने और उपजाने तथा गाय के लिए खरीद ले।''

भाग्य को माँ से यह सुन कर आश्चर्य हुआ। फिर भी खाने के नाम पर वह खुश हो गया और तुरन्त सीधा बाजार चला गया। उसने एक रुपये का पकौड़ा लेकर खाया। अब उसे माँ के दूसरे आदेश का पालन करना था। वह पकौड़ा खाते-खाते नदी की ओर चल पड़ा। नदी किनारे पहुँच कर जेब से उसने एक रुपये का सिक्का निकाला और नदी की धारा में फेंकने के लिए हाथ उठाया। अचानक उसके हाथ रुक गये। क्या यह मूर्खता नहीं है? उसने सोचा। लेकिन यह माँ के आदेश के बिपरीत होगा। वह एक शिला पर बैठ कर सोचने लगा।

अचानक उसे महसूस हुआ कि उसके निकट कोई खड़ा है। वह स्थानीय मन्दिर के पुजारी की बेटी भागीरथी थी। उसने देखा कि भाग्य किसी बात से चिन्तित है। ''तुम नदी में छलांग लगाने के लिए तो नहीं सोच रहे हो न!'' उसने थोड़ी परेशानी से और थोड़ा मज़ाक से भाग्य से पूछा।

भागीरथी उसके दोस्त हरि की बहन थी। ''नहीं भागीरथी, मैं यह सोच रहा हूँ कि इस सिक्के को नदी में फेंकू या नहीं!''

''क्या तुम गंभीरतापूर्वक कह रहे हो?'' भागीरथी ने मुस्काते हुए कहा।

भाग्यनाथ ने तब उसे पूरी कहानी सुना दी। उसे ध्यानपूर्वक सुनने के बाद लड़की हँसी, ''नहीं, सिक्का फेंको नहीं। माँ के कहने का तात्पर्य समझो। माँ चाहती हैं कि यह पैसा अपने ऊपर खर्च न करो और उन्हें वापस कर दो।''

''और एक रुपये से पाँच-पाँच वस्तुएं कैसे खरीदूँ?'' भाग्य ने हास्यास्पद ढंग से भागीरथी से पूछा। भागीरथी जोर से हँस पड़ी, ''तुम सचमुच भोंदू हो। तुम्हारी माँ के कहने का मतलब तरबूज से है; इसमें खाने और पीने के लिए भी है, इसका बीज बोने और उगाने के लिए है और छिलका गाय के लिए भोजन है!''

''मैं तो यह नहीं समझ पाया था, भागीरथी'', भाग्य ने शिला पर से उठते हुए कहा।

''आ जाओ, मैं तुम्हारे लिए एक अच्छा

रसीला तरबूज खरीद दूँगी'', लड़की ने कहा।

बाद में जब भाग्य ने अपनी माँ के हाथ में तरबूज लाकर दिया, तब वह खुशी से दौड़ी हुई पति के पास जाकर बोली, ''देखो, देखो! हमारा भाग्य भोंदू नहीं है, अब वह चतुर हो गया है!''

''उसे यहाँ बुलाओ'', व्यापारी ने आदेश दिया। उसने पूछा, ''मुझे पूरा विश्वास है कि तुमने स्वयं तरबूज के बारे में कभी नहीं सोचा होगा। किसने तुम्हें यह सलाह दी ?''

भाग्य ने सोचा कि मुझे ईमानदारी से पिता को सच बता देना चाहिये। ''हरि की बहन भागीरथी ने'', उसने कहा।

''ओह! हमारे पुजारी की बेटी! सचमुच उसकी बुद्धि प्रखर है। उसने और क्या सलाह दी?'' व्यापारी ने पूछा।

''उसने नदी में एक रुपया फेंकने नहीं दिया। यह रहा एक रुपया!'' भाग्य ने जेब से सिक्का निकाल कर पिता को दे दिया।

भाग्य के जाने के बाद व्यापारी ने पत्नी से कहा, ''भाग्य के लिए बहू मिल गई है।''

''क्या पुजारी की बेटी?'' पत्नी ने पूछा मानो पति से अपनी बात की पुष्टि चाहती हो।

''और कौन?'' व्यापारी ने कहा, ''वह काफी चतुर और तीक्ष्ण-बुद्धि है। वह हमारे भाग्य की देखभाल कर लेगी।''

भाग्य के माता-पिता पुजारी और उसकी पत्नी से मिले जिन्होंने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

विवाह के एक दिन बाद भाग्य दुकान पर जाना नहीं चाहता था। लेकिन भागीरथी ने जोर देकर उसे दुकान पर भेज दिया। लेकिन दुकान पर भाग्य का मन नहीं लगा। इसलिए उसके पिता ने उसे घर वापस जाने की स्वीकृति दे दी।

एक सप्ताह के बाद प्रथा के अनुसार भाग्य भागीरथी को अपने माता-पिता के घर छोड़ आया। दूसरे दिन वह पूरा दिन दुकान पर काम करता रहा। उसका पिता सन्तुष्ट था। उसने निश्चय किया कि भाग्य को अपनी योग्यता को प्रमाणित करने के लिए अवसर देना चाहिये।

दूसरे दिन व्यापारी ने दुकान में भाग्य को सलाह दी कि वह पड़ोसी शहर में जाकर गाँव में बिक्रय के लिए सौदा खरीद लाये। साथ में रुपये

दिया। अगला खेल महिला ले गई। चौथा खेल भाग्य जीत लेगा, ऐसा वह समझ रहा था कि तभी महिला की बिल्ली ने बत्ती को उलट दिया। महिला को बत्ती जलाने में कुछ समय लगा। किस्मत ने पल्टा खाया और महिला जीत गई। भाग्य के उतार-चढ़ाव के मध्य बिल्ली बार-बार

और एक नौकर को भी ले जाये। वह रात को शहर में ठहर जाये और दूसरे दिन सुबह वापस आ जाये।

तदनुसार, दूसरे दिन भाग्य पैसे और एक नौकर को साथ लेकर घोड़ागाड़ी में शहर चल पड़ा। वे दोपहर के बाद देर से शहर पहुँचे। घोड़ागाड़ी को उन्होंने वापस भेज दिया। दोनों ने बाजार में घूम कर कुछ सौदा तय किया और दूसरे दिन मूल्य की अदायगी का वादा कर रात में ठहरने के लिए सराय ढूँढ़ने लगे। उन्हें एक सराय मिल गई जिसकी मालकिन एक युवा स्त्री थी।

भाग्य और उसके नौकर को खाना खिलाते समय सराय की मालकिन ने जूए का प्रस्ताव रखा। आखिर एक होनहार व्यापारी होने के नाते भाग्य कुछ अतिरिक्त धन प्राप्त करने की आकांक्षा रखे। एक मद्धिम प्रकाश में द्युत आरम्भ हुआ। महिला ने भाग्य को पहले दो खेलों में जीत जाने दिया और उसके अन्दर आत्म-विश्वास जगा

दीपक को उलटती रही, हर बार बत्ती गुल होती रही और खेल महिला के पक्ष में खत्म होता रहा। भाग्य इस बात को याद न रख सका कि बिल्ली महिला के संकेत पर बत्ती को उलट देने के लिए प्रशिक्षित की गई है। भाग्य सर्बस्ब हार जाने तक खेलता रहा।

दूसरे दिन सुबह महिला ने इस बात पर दबाव डाला कि नौकर गाँव जाकर उसका बकाया भरने भर पैसे ले आये और उसके लौटने तक भाग्य सराय के बाग और रसोई में उसकी मदद करे।

जब भाग्य दो दिनों तक गाँव नहीं लौटा तो उसके माता-पिता चिन्तित हो गये। नौकर तीसरे दिन भूखा-मरियल होकर घर पहुँचा।

तब तक भागीरथी भाग्य की प्रतीक्षा करने के बाद स्वयं ही ससुराल आ गई। उसने भी नौकर से भाग्य की कहानी सुनी और उसके साथ भाग्य को लाने के लिए शहर जाने को तैयार हो गई। उसने पुरुष बेश बना लिया।

शहर पहुँचने पर नौकर भागीरथी को सराय पर ले गया। भागीरथी ने नौकर को सराय से दूर हट कर गाड़ी में ही रहने को कहा।

भाग्य ने जैसा कि नौकर को बताया था कि कैसे महिला और उसकी पालतू बिल्ली ने उसे धोखा देकर हरा दिया, भागीरथी सावधानी बरतने के लिए अपने साथ एक चूहा ले आई थी। उसने सराय में एक कमरा लिया और महिला को सूचित किया कि वह द्युत में रुचि रखती है। सराय की मालकिन गुप्त रूप से धन कमाने की आशा से बहुत प्रसन्न हो गई।

खेल आरम्भ हुआ। और आगन्तुक (छद्मवेश में भागीरथी) महिला के लिए अधिक चतुर साबित होने लगा। पर भागीरथी सावधान थी। और जैसे ही महिला ने बिल्ली को संकेत भेजा, भागीरथी ने अपने वस्त्रों से चूहे को बाहर निकाल दिया।

बिल्ली चूहे के पीछे दौड़ी और महिला दावं हार गई। क्योंकि बिल्ली सहायता के लिए मौजूद न थी, महिला उसके बाद के सबी दावं हारती चली गई। भागीरथी ने शीघ्र ही दक्षतापूर्वक सिक्कों का एक छोटा-सा ढेर एकत्र कर लिया। भाग्यनाथन ने जो कुछ हारा था, इस प्रकार वापस आ गया।

दूसरे दिन प्रातः भागीरथी किसी बहाने गाड़ी के पास गई और नौकर को पैसे देकर महिला से भाग्य को मुक्त करा कर लाने के लिए कहा। सराय की मालकिन ने नौकर से पैसे लेकर भाग्य को छोड़ दिया और आगन्तुक से पैसे लेने के लिए प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। भाग्य को गाड़ी में अपनी पत्नी को देख कर आश्चर्य हुआ। नौकर ने उसे बताया कि कैसे उसे मुक्त करने के लिए दोनों ने योजना बनाई। वे सब बाजार में गये और तय किये गये सौदों का मूल्य चुकाया। फिर वापस अपने गाँव के लिए चल पड़े।

उन्हें देख कर व्यापारी और उसकी पत्नी अति प्रसन्न हुए। भागीरथी से सारा विवरण सुनने के बाद व्यापारी ने एक ही टीका की, ''भाग्य कभी नहीं बदलेगा, किन्तु हमारी सम्पति हमारी बहू के हाथों में सुरक्षित रहेगी।''

ध्रुवीकरण पत्र

ज़मींदार बजरंग राय स्वयं व्यक्तियों के व्यवहार -ज्ञान तथा उनकी ईमानदारी के बारे में तहक़ीक़ात करते थे और उन्हें ग्रामाधिकारी के पद पर नियुक्त करते थे। उन्हें समाचार मिलने लगे कि इनमें से चंद ग्रामाधिकारी घूसखोर हैं। एक दिन पहले उन्हें गुप्तचरों से समाचार मिला कि ग्रामाधिकारी नवीनचंद्र अव्वल दर्जे का घूसखोर है। उन्होंने तुरंत दिवान को बुलवाया और हुक्म दिया कि उस घूसखोर के बारे में विवरण इकट्ठे किये जायें। पूरा विवरण मिल चुकने के बाद दिवान को इसमें संदेह नहीं रह गया कि नवीनचंद्र बड़ा ही घूसखोर है।

दिवान ने एक हफ्ते के अंदर ही उसका तबादला समस्तपुर में कर दिया। समस्तपुर वह गाँव है, जहाँ लोग आपस में नहीं झगड़ते, चोरियाँ नहीं होतीं। जहाँ सदा शांति छायी रहती है। दिवान ने सोचा कि ऐसे प्रशांत गाँव में भेजने से नवीनचंद्र को घूस लेने का कोई मौक़ा ही नहीं मिलेगा।

महीना बीत गया, पर कोई भी शिकायत लेकर नवीनचंद्र के पास नहीं आया। इससे वह बड़ा ही दुखी हुआ। बिना घूस लिये उससे रहा नहीं गया।

एक दिन वह सबेरे खिडकी के पास खड़े होकर गली से होते हुए आने जानेवालों को देख रहा था। उसने देखा कि दो आदमी ऊँची आवाज़ में वाद-विवाद करते हुए गुजर रहे हैं। नवीनचंद्र ने चिल्लाकर उन्हें बुलाया और उनसे पूछा, ''बीच रास्ते में किस बात को लेकर तुम दोनों आपस में झगड़ रहे हो?'' उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, ''महोदय, हम दोनों जिगरी दोस्त हैं। हम चर्चा कर रहे थे कि इस साल उड़द दाल का दाम अधिक होगा या मूँग दाल का।''

''ठीक है, दोनों दस-दस रुपये दो। तुम दोनों दोस्त हो, इसका ध्रुवीकरण पत्र दूँगा।'' नवीनचंद्र ने कहा।

- काशीराम

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

जौनपुर के जमीन्दार अपने खजाने के लिए एक संतरी बहाल करना चाहते थे। वीर और बसन्त, दो युवकों को स्वीकृति के लिए उनके पास भेजा गया। उन्होंने प्रयोग के आधार पर वीर को रात में खजाने के पहरे पर खड़ा कर दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने वीर को बुला कर अपने बाग में काम करने के लिए कहा। जमीन्दार ने देखा कि वीर बहुत परिश्रमपूर्वक कार्य कर रहा है।

उस रात में खजाने पर बसन्त की ड्यूटी थी। अगले दिन सुबह उसे भी बाग में काम करने के लिए कहा गया। जब जमीन्दार उसे देखने गये तो वह गहरी नींद में सो रहा था।

शाम को बसन्त को संतरी के पद पर बहाल कर लिया गया। जमीन्दार की पत्नी को आश्चर्य हुआ और उसने जमीन्दार से बसन्त को संतरी बहाल करने का कारण पूछा।

- जमीन्दार ने क्या उत्तर दिया होगा?
- अब, बसन्त का चुनाव करने का जमीन्दार का मापदण्ड क्या था?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक बताओ। अपनी प्रविष्टि के साथ निम्नलिखित कूपन को भर कर एक लिफाफे में भेज दो जिस पर "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो" लिखा हो।

अन्तिम तिथि : अप्रैल ३०, २००५

नाम --उम्र------------जन्मतिथि------------------------

विद्यालय ---कक्षा------------

घर का पता --

--पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर   प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

अपात्र-दान

मगध राज्य जब उन्नत दशा में था, तब बोधिसत्व एक राजा के यहाँ कोशाध्यक्ष थे। उनके पास अस्सी करोड़ मुद्राओं की निजी संपत्ति थी।

उन्हीं दिनों काशी राज्य में श्रीवत्स नामक एक और धनवान रहते थे। उनके यहाँ भी अस्सी करोड़ मुद्राओं से ज्यादा संपत्ति थी। ये दो करोड़पति बोधिसत्व तथा श्रीवत्स दिली दोस्त थे।

दुर्भाग्यवश व्यापार में श्रीवत्स की सारी संपत्ति नष्ट हो गई और वह एक गरीब बन बैठे। उन्हें अपने मित्र बोधिसत्व की याद हो आई।

श्रीवत्स अपनी पत्नी को साथ लेकर पैदल चलकर मगध राज्य पहुँचे और बोधिसत्व से मिलने गये। बोधिसत्व ने आगे बढ़कर श्रीवत्स से कुशल मंगल पूछे। इस पर वह रोते हुए बोले, ''बोधिसत्व, मेरे बुरे दिन आ गये हैं। मैं एक भिखारी बन गया हूँ। इस हालत में तुम्हें छोड़कर मेरी मदद करनेवाला कोई नहीं है। इसी विश्वास को लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ।''

''मेरे प्यारे श्री वत्स, तुम बिलकुल चिंता न करो। विपत्ति के समय दर असल तुम्हें जिस जगह पहुँचना था, ठीक उसी जगह पहुँच गये हो!'' यों समझा कर बोधिसत्व ने अपनी सारी संपत्ति में से आधा-याने चालीस करोड़ मुद्राएं अपने मित्र को दे दीं और साथ ही अपने परिचारकों में से आधे लोगों को उसे सौंप दिया।

थोड़े दिन बीत गये। राज्य में अराज कता फैलने की वजह से बोधिसत्व अपने पद के साथ धन भी खो बैठे। वे भी दरिद्र बन गये। उनके मन में यह विश्वास था कि इस दुख व दारिद्र्य के वक़्त अपने मित्र श्रीवत्स के सिवाय कोई उनकी मदद करने वाला नहीं है। इसी विश्वास के बल पर बोधिसत्व अपनी पत्नी के साथ काशी राज्य के लिए चल पड़े।

काशी नगर की सीमापर पहुँचते ही बोधिसत्व अपनी पत्नी को एक पेड़ की छाया में बिठा कर बोले, ''तुम घबराओ मत, मैं अपने दिली दोस्त

श्रीवत्स को सारा हाल सुनाकर तुम्हें लिवा लाने के लिए गाड़ी के साथ परिचारकों को भी भेज दूँगा।'' यों कहकर वे श्रीवत्स ने मिलने चले गये।

श्रीवत्स ने बोधिसत्व को एड़ी से लेकर चोटी तक देखा और पूछा, ''बताओ, तुम किस काम से आये हो?''

''मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।'' यह उत्तर देकर बोधिसत्व ने अपना सिर झुका लिया। श्रीवत्स ने फिर पूछा, ''तुम ठहरे कहाँ हो?''

''अभी तक कहीं नहीं ठहरा हूँ। मैं अपनी पत्नी को शहर की सीमा पर छोड़ आया हूँ।'' बोधिसत्व ने जवाब दिया।

''मेरे घर में तुम्हें ठहरने की इज़ाजत नहीं है! मुट्ठी भर अनाज देंगे। उसे ले जाकर मांड़ बना कर पी लो।'' श्रीवत्स ने कठोर स्वर में कहा।

दूसरे ही क्षण एक सेवक अंजुली भर अनाज लाकर बोधिसत्व के झोले में डाल कर चला गया। बोधिसत्व अपनी पत्नी के पास लौट आये।

बोधिसत्व की पत्नी ने पूछा, ''आपके दिली दोस्त ने क्या-क्या दिया है?''

''मित्र श्रीवत्स ने अंजुली भर अनाज देकर हमारा पिंड छुड़ा लिया है।'' बोधिसत्व ने शांत स्वर में जवाब दिया।

''आप ने इसे क्यों स्वीकार कर लिया? हमने उन्हें जो चालीस करोड़ मुद्राएं दी हैं, उसका फल है यह?'' पत्नी ने क्रोध में आकर पूछा।

आँसू भरी अपनी पत्नी को सांत्वना देते हुए बोधिसत्व शांत स्वर में बोले, ''चाहे जो हो, मित्रों के बीच शत्रुता का भाव पैदा नहीं होना चाहिए। इसीलिए मैंने यह अनाज स्वीकार कर लिया है।''

पति-पत्नी यों बातचीत कर रहे थे, तभी एक सेवक उस रास्ते से आ गुज़रा। इसके पहले बोधिसत्व ने अपने जिन सेवकों को बांट कर दिया था, उन्हीं में से वह एक था ।

उसने अपने पुराने मालिक को पहचान लिया और उनके पैरों में गिर कर पूछा, "आप यहाँ पर कैसे आये?"

बोधिसत्व ने उसे सारा वृत्तांत सुनाया। इस पर वह सेवक बड़ा दुखी हुआ। इसके बाद बोधिसत्व और उनकी पत्नी को वह घर ले गया। उन्हें खाना खिलाकर उनके ठहरने के लिए एक कमरा दे दिया। इसके बाद उसने अपने साथी सेवकों को यह ख़बर सुनाई।

धीरे-धीरे करोड़पति श्रीवत्स के मित्र-द्रोह का समाचार काशी राजा के कानों में पड़ा। काशी राजा ने बोधिसत्व को बुलवाकर पूछा, "क्या यह बात सच है कि आप ने श्रीवत्स को चालीस करोड़ मुद्राएं दी हैं?"

बोधिसत्व ने राजा को आदि से अंत तक सारा समाचार सुनाया। इस पर राजा ने श्रीवत्स को बुला भेजा, उसे बोधिसत्व को दिखाते हुए पूछा, "यह बात सच है कि तुमने इस सज्जन के द्वारा धन की सहायता पाई है?"

"जी हाँ महाराज, सच है!" श्रीवत्स ने कांपते हुए जवाब दिया।

"तब तो तुमने उस सहायता के बदले इनके प्रति कैसा व्यवहार किया है?" राजा ने पूछा।

श्रीवत्स ने लज्जा के मारे अपना सिर झुका लिया। इसके बाद राजा ने अपने मंत्रियों से सलाह-मशविरा करके श्रीवत्स की सारी संपत्ति बोधिसत्व के हाथ सौंपने का फ़ैसला सुनाया।

"बोधिसत्व ने राजा से निवेदन किया- "महाराज, मुझे दूसरों की संपत्ति एक कौड़ी भी नहीं चाहिए। मेरी संपत्ति मुझे वापस कर दे तो मैं खुश हो जाऊँगा!"

इस पर राजा ने श्रीवत्स के द्वारा बोधिसत्व को चालीस करोड़ मुद्राएं दिला कर उन्हें समझाया, "अपात्र-दान कभी नहीं करना चाहिए।"

बोधिसत्व फिर से धनवान बनकर दान-धर्म करते कई वर्षों तक सुखी जीवन बिताते रहे।
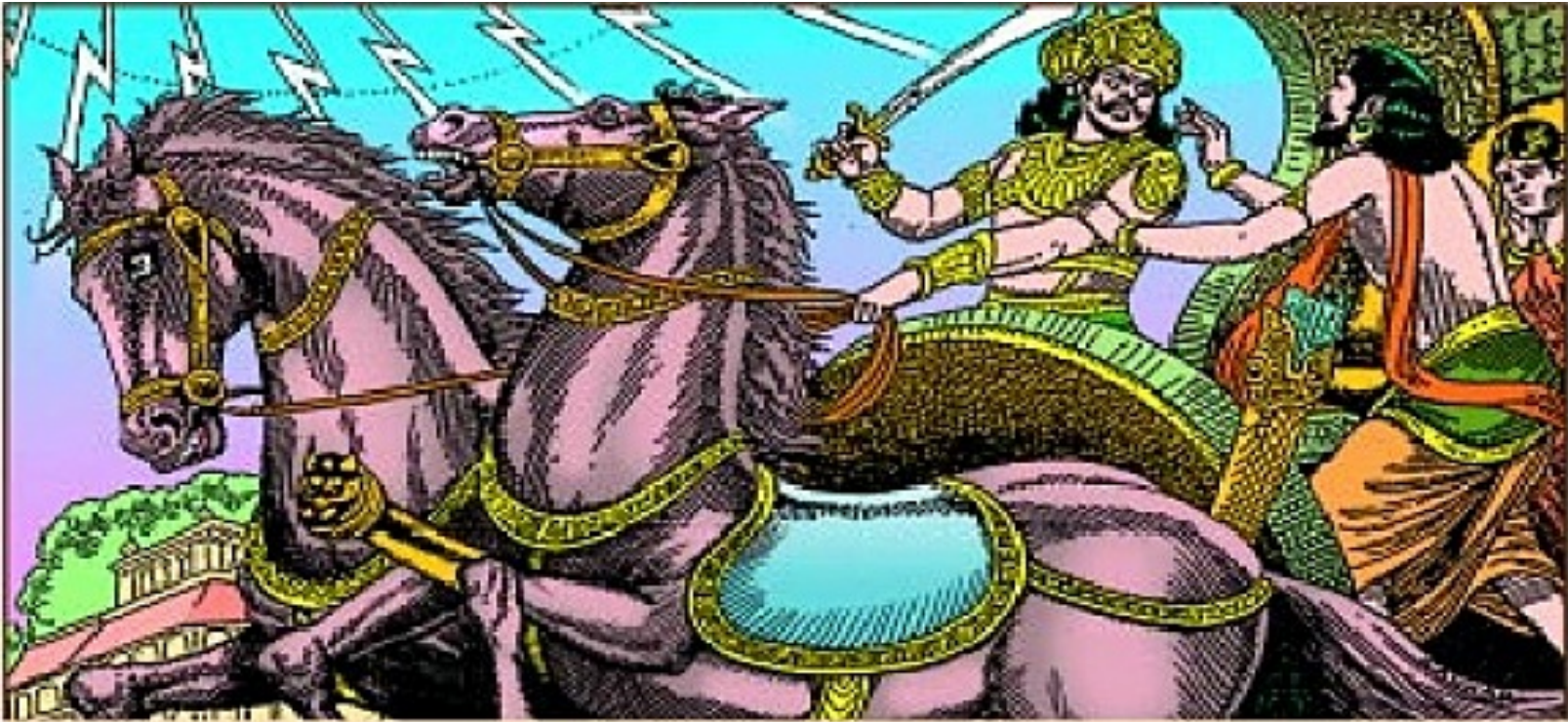
विष्णु पुराण

कृत और त्रेता युगों के बाद द्वापर युग में राक्षस अधिक संख्या में मानवों के रूप में जन्म लेकर पृथ्वी के लिए भार बन गए। इस पर भू देवी ने विष्णु से प्रार्थना की।

विष्णु ने अभय देते हुए कहा, "तुम चिन्ता न करो। मैं कृष्णावतार लेकर तुम्हारे सारे दुखों को दूर कर दूँगा।"

आदिकाल से ही विष्णु के प्रबल शत्रु कालनेमि नामक राक्षस ने कंस के नाम से जन्म लिया और मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र कहलाया।

देव और दानवों के युद्ध में दानवों के नेता बनकर विष्णु से युद्ध करने वाले विप्रचिति के राजा ने जरासंध के रूप में जन्म लिया और राजाओं को पकड़ कर भैरव की बलि देने लगा। कंस उसी जरासंध का दामाद था।

उग्रसेन के छोटे भाई की पुत्री देवकी का विवाह यदुवंशी राजा वसुदेव के साथ हुआ। कंस उस दंपति को रथ पर बिठाकर विदा करने जा रहा था। उसी वक्त यह आकाशवाणी सुनाई दी, "देवकी की आठवीं संतान के हाथों कंस मार डाला जाएगा।" इस पर क्रुद्ध हो कंस ने देवकी का वध करना चाहा। तब वसुदेव ने यह वचन दिया कि देवकी के गर्भ से पैदा होने वाले सभी शिशुओं को वह कंस के हाथ में सौंप देगा। इस वचन के अनुसार वसुदेव ने छः शिशुओं को कंस के हाथ सौंप दिया जिनकी उसने हत्या कर दी।

इसके बाद देवकी के गर्भ से सातवीं संतान के रूप में विष्णु के अंश को लेकर आदिशेष अवतार लेने लगे। इस पर विष्णु ने योगमाया देवी को आदेश दिया कि आदिशेष वाले पिण्ड को

गोकुल वासिनी वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में पहुँचा कर स्वयं नन्द की पत्नी यशोदा की पुत्री के रूप में जन्म धारण करें। देवकी का सातवां गर्भ प्रसव का रूप लिए बिना ही उसके भीतर समा गया। इसके पश्चात देवकी ने जब आठवीं बार गर्भ धारण किया तब कंस ने देवकी तथा वसुदेव को कारागार में डाल दिया।

वह भाद्रपद महीने का कृष्ण पक्ष था। अष्टमी के दिन चन्द्रमा ने रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश किया। अर्द्धरात्रि के समय अचानक कारागार के पहरेदार निद्रा की गोद में चले गए। उसी समय देवकी का प्रसव हुआ। विष्णु ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया। आश्चर्य की बात थी कि कारागार के द्वार अपने आप खुल गए।

विष्णु के आदेश पर वसुदेव ने उस शिशु को यमुना नदी पार कराया। वसुदेव यशोदा की बगल में अपने साथ लाए हुए बालक को लिटा कर अचेतन अवस्था में पड़ी हुई बालिका को उठा करके वापस चले आये। जब वसुदेव कारागार के अन्दर प हुँच गए तब सारी दिशाओं को प्रतिध्वनित करनेवाले स्वर में वह बालिक ा रोने लगी।

जैसे ही कंस उस शिशु को शिला पर पटक कर मारने को हुआ, उसी वक्त वह बालिका कंस के हाथों से छूट कर आकाश में उड़ गई और खिल-खिला कर हँसते हुए बोली, "अरे दुष्ट कंस, तुम्हारा संहार करने वाला शिशु जीवित है।" यह कहकर वह बालिका दुर्गादेवी के रूप में दर्शन देकर अंतर्धान हो गई।

इसके पूर्व कंस ने भय और क्रोध के वशीभूत हो देवकी तथा वसुदेव के सामने ही उनके छः शिशुओं का संहार किया था।

गोकुल में कृष्ण के जन्म के अवसर पर कृष्णाष्टमी का दिन गोकुलाष्टमी के रूप में धूमधाम से मनाया गया। इसके पूर्व कृष्ण के बड़े भाई के रूप में रोहिणी के यहाँ बलराम ने जन्म लिया था।

कालांतर में कंस ने उग्रसेन को बन्दी बनाकर उनके सिंहासन पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने सभी राक्षसों का संगठन किया और छोटे शिशुओं का संहार करने के लिए पूतना नामक राक्षसी को भेजा। पूतना मानवी के रूप में प्रत्येक गांव में जाकर छोटे शिशुओं का संहार करते हुए गोकुल पहुँची। वहाँ पर पूतना जब कृष्ण को दूध पिलाने लगी, तब उन्होंने दूध चूस कर

पूतना को मार डाला।

बवण्डर के रूप में उड़ा ले जाने वाले तृणावर्त को तथा गाड़ी के रूप में टूट पड़नेवाले शकटासुर को भी बालक कृष्ण ने मार डाला।

यशोदा कृष्ण को अपने निजी पुत्र के रूप में लाड़-प्यार से पाल-पोसकर उस पर मुग्ध होती रही। बालकृष्ण नटखट बनकर घर-घर में मक्खन चुराने लगे। कृष्ण ने अनेक अद्भुत लीलाएँ कीं। कृष्ण की लीलाओं से गोकुल आनन्द की तरंगों में तिरने लगा।

यशोदा ने कृष्ण को ओखली से बांध दिया। कृष्ण उसे दो महावृक्षों के मध्य खींच ले गये। इस पर दोनों वृक्ष जड़ सहित उखड़ गए और उन वृक्षों में स्थित गंधर्व शाप से मुक्त हो गए।

यशोदा ने सुना कि कृष्ण ने मिट्टी खा ली है। इस पर उसने उसे मुंह खोल कर दिखाने के लिए डांटा। तब कृष्ण ने जम्भाई लेकर यशोदा को अपने विश्व रूप के दर्शन कराए।

कालीय महासर्प के फणों पर तांडव करके कृष्ण ने उसका मर्दन किया।

गोकुल के निवासी वृन्दावन के लिए जब प्रवासी बन गए, और उन लोगों ने गोवर्द्धन पर्वत की पूजा की, तब इस पर देवेन्द्र ने कुपित होकर ओलों की वर्षा की। उस वक्त कृष्ण ने अपनी उंगली से गोवर्द्धन पर्वत को उठाकर छतरी की भांति पकड़ करके गोपों तथा गायों की रक्षा की और इस प्रकार इन्द्र के अहंकार का दमन किया।

कृष्ण और बलराम का संहार करने के लिए कंस ने धनुर्यज्ञ के बहाने उन्हें मथुरा नगर में बुलवा लिया। उसने इन दोनों बालकों का बध करने का जो षड्यंत्र रचा उसे बालक यदु वीरों ने विफल कर दिया। बाल कृष्ण ने कंस को सिंहासन पर से खींच कर मुक्के मार-मार कर उसका अंत कर डाला।
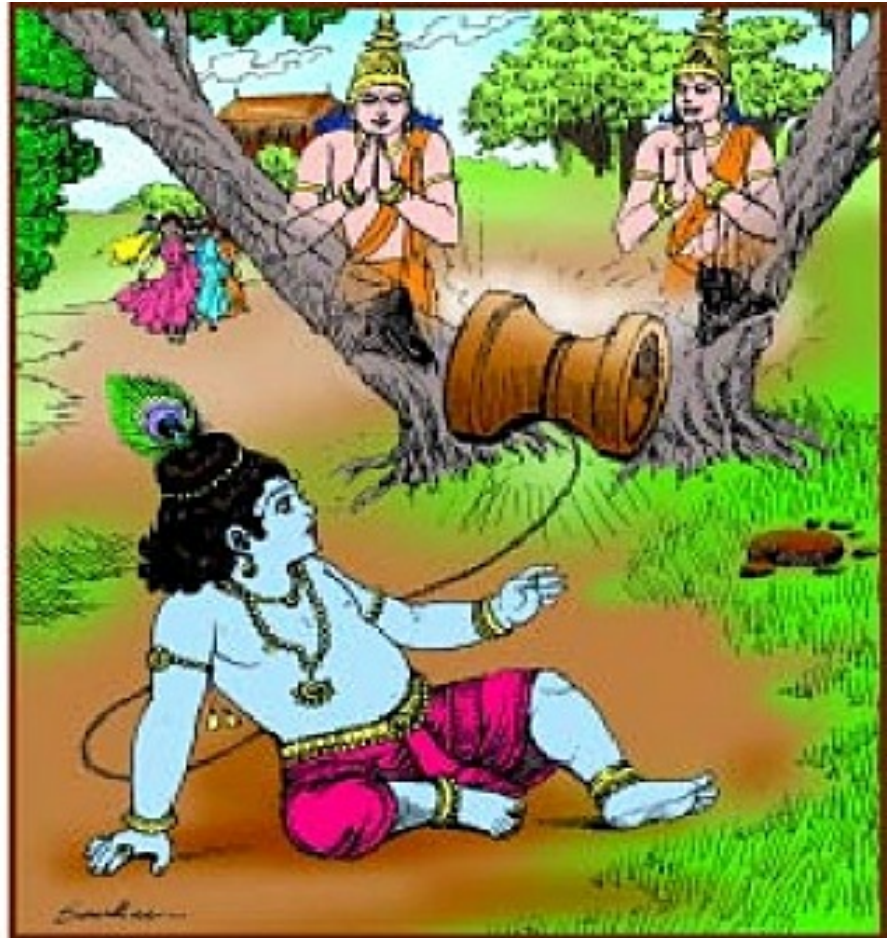
देवकी, वसुदेव तथा उग्रसेन को मुक्त करके कृष्ण ने उग्रसेन को सिंहासन पर बिठाया। कालान्तर में बड़े होकर कृष्ण और बलराम यदु वंश के नेता बन गए।

जरासंध ने अपनी अस्ति और प्राप्ति नामक पुत्रियों को विधवाएँ बनाने के कारण कृष्ण से बदला लेना चाहा। उसने तेईस अक्षौहिणी सेना के साथ मथुरा को घेर लिया। कृष्ण ने जरासंध को हरा दिया और उसे जीवित छोड़ कर भगा दिया। यवन म्लेच्छों के राजा कालयवन राक्षस

को जरासंध ने कृष्ण के विरोध में उकसाया। कृष्ण कालयवन से बचकर भाग गए और मुचिकुन्द की गुफा में जा छिपे। मुचिकुंद इक्ष्वाकु समय के महान चक्रवर्ती मांधाता के पुत्र थे और एक महान सम्राट थे।

मुचिकुंद ने देवासुर संग्राम के समय देवताओं की मदद की थी। इस पर देवताओं ने उनसे वर माँगने को कहा। मुचिकुन्द ने मोक्ष की कामना की। इस पर देवताओं ने उन्हें बताया कि द्वापर युग में उन्हें कृष्ण के दर्शन हो सकते हैं और उनके दर्शन से ही मोक्ष मिल सकता है। तब मुचिकुंद ने यह वर मांगा कि इस बीच उनकी निद्रा भंग करने वाले उसके देखते ही भस्मीभूत हो जाएं।

कालयवन ने गुफा में पहुँच कर मुचिकुन्द को ही कृष्ण समझा और उन पर लात मारी। इस पर मुचिकुन्द की निद्रा भंग हो गई और उन्होंने कालयवन की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। परिणाम स्वरूप वह जल कर भस्म हो गया।

कृष्ण ने मुचिकुन्द को दर्शन देकर बताया, ''तुम बदरिकाश्रम में जाकर तपस्या करो, तुम्हारी तपस्या सफल होगी और तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।''

जय और विजय अपने तीसरे जन्म में कृष्ण के शत्रु बनकर शिशुपाल तथा दंतवक्र के नाम से पैदा हुए।

चेदि राजा दमघोष के पुत्र के रूप में शिशुपाल चार हाथों तथा तीन आँखों के साथ पैदा हुआ। उसके जन्म के समय यह आकाशवाणी हुई कि जिसके द्वारा उठाने पर शिशु के दो हाथ और एक आँख अदृश्य हो जायेंगे, उसी के हाथों इसका संहार होगा।

शिशुपाल ही मां सात्वती अपने घर आए सभी लोगों से बालक को गोद में लेने की बात कहा करती थी। सात्वती कृष्ण और बलराम के रिश्ते में फूफी लगती थी। उनके हाथ में भी सात्वती ने शिशुपाल को दिया। कृष्ण की गोद में आते ही शिशुपाल सामान्य बालक के समान हो गया। सात्वती ने कृष्ण से निवेदन किया कि शिशुपाल के सौ अपराधों को क्षमा कर दें। इस पर कृष्ण ने सात्वती को वचन दिया।

शिशुपाल जब राजा बना तब जरासन्ध के साथ मिलकर अपराध एवं अत्याचार करने लगा। उसका छोटा भाई दन्तवक्र इन कामों में उसकी मदद करने लगा।

जरासन्ध बराबर मथुरा नगर पर आक्रमण करता रहा। इस पर कृष्ण ने कई बार उसे हराया और भगा दिया। इस प्रकार कृष्ण ने अनेक दुष्ट एवं अत्याचारी राजाओं का संहार किया।

कृष्ण ने समुद्र से स्थल मांग कर समुद्र के मध्य भाग में विश्वकर्म के द्वारा सुरक्षित रूप में द्वारका नगर का निर्माण कराया और अपने वंश के लोगों को वहाँ भेज दिया।

जरासन्ध ने अन्तिम बार शिशुपाल, दन्तवक्र, पौंड्रक, शाल्व इत्यादि अपने अनुयायी बने सभी राजाओं का संगठन करके मथुरा नगर पर फ़िर चढ़ाई कर दी।

इसके पूर्व ही कृष्ण और बलराम ने यादवों तथा मथुरा की प्रजा को भी द्वारका में पहुँचा दिया था। इसके बाद वे भी प्रवर्षणगिरि पहुँच कर उसके

शिखर पर चले गए। जरासन्ध आदि ने प्रवर्षणगिरि के चारों तरफ़ आग लगा कर गिरि को जला दिया। इस पर कृष्ण और बलराम आकाश मार्ग से सुरक्षित द्वारका नगर पहुँचे। जरासन्ध और शिशुपाल यह सोच कर बिगुल बजाते वापस लौट रहे थे कि कृष्ण और बलराम उस अग्नि काण्ड में जल-भुन कर भस्म हो गये होंगे। तभी द्वारका में कृष्ण ने शंख बजाया। उस शंख की ध्वनिसुनकर सबके चेहरे सफ़ेद पड़ गए और वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

इसके बाद शिशुपाल ने आग बबूला हो मथुरा नगर को जलवा दिया।

जरासन्ध ने नौकाओं द्वारा द्वारका को घेरने के लिए अपने सैनिकों को भेजा पर भयंकर तूफान में फंस कर सारी नौकाएं डूब गईं। जरासन्ध समुद्र के इस पार किनारे पर खड़े होकर लहरों के थपेड़ों

को देख रहा था। तब कृष्ण द्वारा "नानाजी" का सम्बोधन और उनकी खिलखिलाहट सुनाई दी और समुद्र के मध्य एक पहाड़ पर खड़े होकर हँसते हुए कृष्ण उसे दिखाई दिये।

विदर्भ राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी के रूप में लक्ष्मी पैदा हुई। वह बचपन से ही कृष्ण को अपना पति बताने लगी थी। रुक्मिणी का बड़ा भाई रुक्मी कृष्ण के शत्रु पक्ष में मिल गया और रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ करने की सारी तैयारियाँ करने लगा। इस पर रुक्मिणी ने कृष्ण के नाम संदेशा भेजा कि उस विवाह को भंग करके कृष्ण उसे स्वीकार करें।

विवाह के पूर्व रुक्मिणी दुर्गा की पूजा करके मन्दिर से लौट रही थी। तब कृष्ण ने रुक्मिणी को हाथ का सहारा देकर चार घोड़े वाले अपने रथ पर खींच लिया। साथ ही रुक्मी, शिशुपाल और जरासन्ध का सामना भी किया।

इस बीच बलराम यादव वीरों को साथ लेकर कृष्ण से आ मिले। कृष्ण ने शिशुपाल को मार भगाया। बलराम ने जरासन्ध को हरा कर भगा दिया और सभी शत्रु राजाओं को तितर-बितर कर दिया।

क्षत्रिय वीर के योग्य राक्षस विवाह के रूप में उठा लाई गई रुक्मिणी के साथ कृष्ण का विवाह द्वारका में वैभव के साथ संपन्न हुआ।

कृष्ण पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने सत्राजित के भाई का बध करके उसके हाथ से श्यमन्तक मणि की चोरी की है। इस आरोप को झूठा साबित करने के लिए कृष्ण उस मणि की खोज में चले गए। जंगल में एक गुफा के अन्दर कृष्ण को वह मणि दिखाई दिया। इस पर कृष्ण ने जांबवान के साथ युद्ध करके उसकी पुत्री जांबवती के साथ विवाह किया। फिर उस मणि को सत्राजित के हाथ सौंप कर भूदेवी की अंशवाली उसकी पुत्री सत्यभामा के साथ विवाह कर लिया। इसके बाद कृष्ण मित्रविन्द, कालिन्दी, लक्षणा, भद्र और नाग्रजिति के साथ विवाह करके अष्ट महिषियों के साथ अष्ट सिद्धियों से पूर्ण योग पुरुष जैसे द्वारका को राजधानी बनाकर यादवों के प्रमुख नेता बनकर राज्य करने लगे।
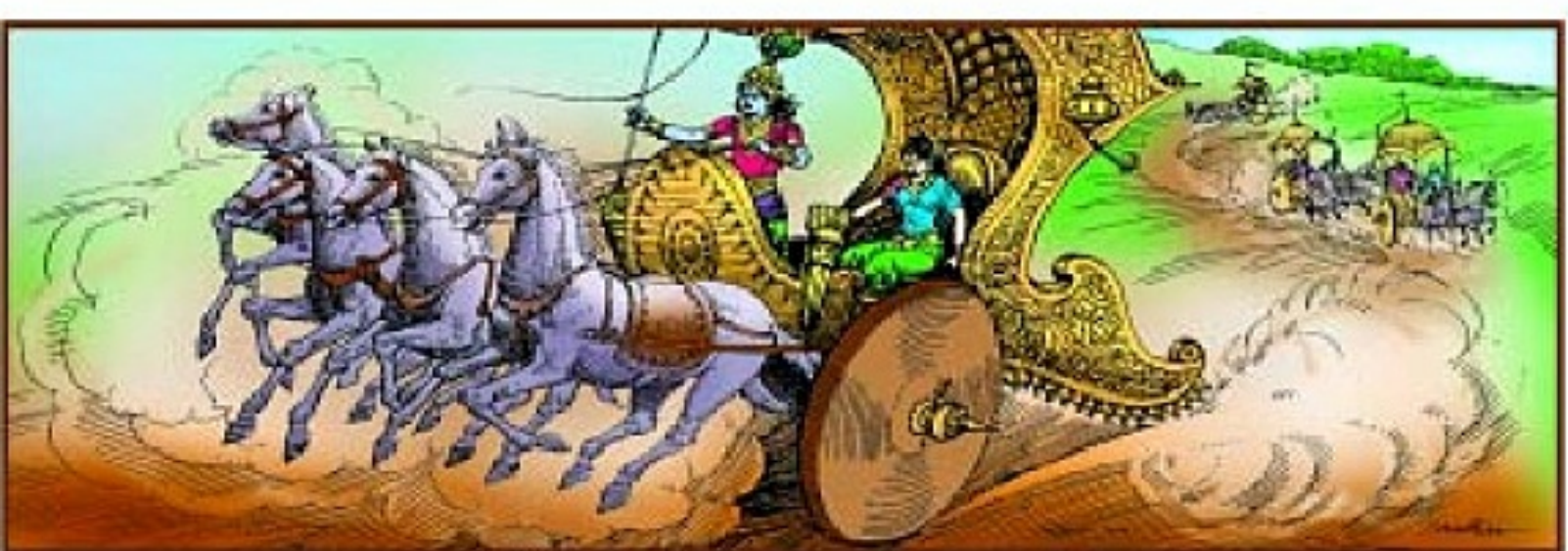
नालायक़ नहीं, लायक़ है

शंकर, शीतल का बेटा था। उसे पक्का विश्वास था कि उसका बेटा एकदम निकम्मा है और वह किसी काम के लायक़ नहीं है। इसलिए वह हर छोटी-सी बात पर उसे कोसता था, उसे हुक्म देता था, जिसके कारण वह अपनी तरफ़ से कुछ भी सोच नहीं पाता था। सच कहा जाए तो उसके निकम्मेपन का कारण उसका पिता ही था।

पिता के इशारे पर ही नाचनेवाला शंकर एकदम निठल्लु व मूर्ख बना। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गयी, वैसे-वैसे उसका दिमाग़ भी बिलकुल बिगड़ता गया। उसे एकमात्र विद्या जो मालूम थी,वह यह थी कि वह गाँव के तालाब में डुबकी लगा कर सांस को नियंत्रित करता था और बहुत देर तक पानी में बैठा रहता था। चूँकि उसका पिता शीतल इस विषय में हस्तक्षेप करता नहीं था, इसलिए उसने इस विद्या में दक्षता पायी। पिता जो भी काम उसे सौंपता था, वह उसे किसी न किसी तरह से बिगाड़ डालता था।

शीतल इस उम्मीद पर ही जीवित रहने लगा कि हो सकता है, शादी के बाद इसकी बुद्धि ठिकाने आ जाए और लायक़ बन जाए। उसकी पत्नी बहुत पहले ही मर चुकी थी। घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता था। उसे लगा कि बहू के आ जाने से घर का काम भी वह खुद संभालेगी और उसे पर्याप्त विश्राम मिलेगा। परंतु गांव का कोई भी निवासी अपनी बेटी की शादी शंकर से करने के लिए तैयार नहीं था।

एक दिन पहले ही उसे मालूम हुआ कि पास ही के गाँव में एक रिश्ता है। वहाँ जाने के पहले उसने बेटे शंकर से बताया, ''देखो, उनके घर पहुँचते ही चप्पल दरवाज़े के पीछे छोड़ दो। अंदर जाने के बाद कुर्सी पर बैठ जाओ। सवाल पूछने पर ही जवाब देना।''

पिता का कहा उसने ध्यान से सुना। सिर

हिलाया, मानों वह सब कुछ समझ गया हो। पिता की कही बातें अपने ही आप वह दोहराने लगा। इस प्रक्रिया में उन बातों में हेर-फेर हो गया।

जब वे दुलहिन के घर पहुँचे तब शंकर ने अपने चप्पल कुर्सी में रख दिये और वह दरवाज़े के पीछे बैठ गया।

शंकर को देखते ही लड़की के पिता को उसकी असलियत मालूम हो गयी। उसने लड़की को दिखाने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया और कहा, ''ऐसे पागल से हमें शादी नहीं करानी है। इसी पल यहाँ से चले जाओ।''

घर पहुँचने के बाद शीतल ने चिल्लाते हुए शंकर से कहा, ''मैंने जो कहा, उसके बिलकुल विपरीत तुमने कर डाला। इस जन्म में तुम्हारी शादी नहीं होगी। कोई सिरफिरा ही अपनी बेटी की शादी शायद तुमसे कराये।''

शंकर ऐसे सिरफिरे की खोज में लग गया। उसी रात वह घर से निकल पड़ा तीन दिनों के बाद चौथे दिन शाम को वह एक पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ की गुफा से उसे एक अजीब आवाज़ सुनायी पड़ी। उस गुफा में एक राक्षस सो रहा था। उसी का खर्राटा उसने सुना था।

शंकर गुफ़ा के अंदर गया। उसे लगा कि उसके पिता ऐसे ही सिरफिरेकी बात कर रहे थे। वह अपने आप कहने लगा, ''अच्छा हुआ, मैं सही जगह पर आ गया। इसे शायद मालूम हो गया होगा कि मैं आ रहा हूँ, इसीलिए डरकर यहाँ छिप गया होगा।'' उसने राक्षस के बाल कसकर पकड़ लिये और उसे ज़ोर से हिलाने -डुलाने लगा।

राक्षस जंभाई लेते हुए उठा और चिल्लाने लगा, ''किसने मुझे जगाने की जुर्रत की?''

अरे सिरफिरे, अपनी बेटी की शादी मुझसे कराये बिना कहां भागोगे? दहेज देकर तुरंत मेरी शादी करा दो,'' कहते हुए उसने राक्षस का कान मरोड़ा।

राक्षस आग-बबूला हो उठा। वह शंकर का शरीर तोडकर निगल डालने ही वाला था कि इतने में राक्षस की पत्नी बाहर आयी। उसने शंकर की बातें सुन लीं। उसकी एक बेटी थी, जो बहुत ही मोटी थी। कई कोशिशों के बावजूद अब तक वह बेटी की शादी कराने में नाकामयाब ही रही।

इसलिए राक्षसी जैसे ही बाहर आयी, वह पति राक्षस से कहने लगी, ''तुम्हारा दिमाग क्या कहीं

घास चरने गया है? दामाद आये हुए हैं, उनका आदर-सत्कार करना हमारा फ़र्ज़ नहीं?.''

''ठीक है, ठीक है, पर लड़की है कहाँ?'' कहते हुए शंकर ने इर्द-गिर्द देखा।

''वह घूमने गयी है। आने में दो चार घंटे लग जायेंगे। बहुत थके लगते हो। थोड़ा-बहुत खा लो और विश्राम कर लो,'' राक्षसी ने कहा। शंकर ने राक्षसी के दिये फल खाये, दूध पी लिया और अंदर की गुफ़ा में जंतुओं के चर्मों पर लेट गया।

शंकर हट्टा-कट्टा था। राक्षस खा जाना चाहता था। परंतु राक्षसी उसे ऐसा करने से रोकने के लिए दोनों गुफाओं के बीच में जमकर बैठ गयी।

राक्षसी की बेटी आधी रात को आयी और होहल्ला मचाने लगी। इससे शंकर जाग उठा और माँ-बेटी की बातचीत सुनने लगा।

''इतने लंबे अर्से के बाद तेरा पति तुझे ढूँढ़ता हुआ आ गया,'' माँ राक्षसी ने आनंद-भरे स्वर में कहा।

''कहाँ है? कहाँ है?'' कहती हुई बेटी राक्षसी गुफ़ा के अंदर आयी, जहाँ शंकर लेटा हुआ था।

शंकर ने आँख की कोर से राक्षसी की बेटी को देखा और डर गया। वह माता-पिता से भी अधिक विकृत थी।

शंकर को देखने के बाद राक्षसी की बेटी ने कहा, ''मक्खन की तरह है।''

''कहीं उसे तोड़-मरोड़कर खा जाने का इरादा तो नहीं है न? इसके सिवा कोई और पति नहीं मिलेगा।'' उसने बेटी को सावधान किया।

''ठीक है, मैं इसका कुछ नहीं बिगाड़ूँगी। पर पिता इसे खाये बिना रह सकेगा?''

"इसीलिए इसकी रखवाली करने यहाँ बैठी हूँ। मैं थोड़ी देर तक घूम-फिरकर आऊँगी। इस का ख्याल रखना," कहकर राक्षसी बाहर चली गयी।

राक्षसी की बेटी जैसे-जैसे शंकर को देखती जा रही थी, वैसे-वैसे उसे खा जाने की प्रबल इच्छा उसमें तीव्र होने लगी। सोचा, इसे गुफा में ही खा जाऊँगी तो माँ ज़िन्दा नहीं छोड़ेगी। इसलिए उसने शंकर को जगाया और कहा, "चलो, शादी के सारे इंतज़ाम पूरे हो गये।"

शंकर ने उसकी कुटिल चाल भांप ली। उसने कहा, "पहले दहेज का धन यहाँ रखो, तभी शादी होगी।"

राक्षसी की बेटी अंदर गयी और चमड़े की एक थैली में रत्न, जवाहरात व सोना भरकर ले आयी और थैली शंकर को सौंपने के बाद दोनों बाहर आये।

गुफा से बाहर आते ही शंकर ने राक्षसी की बेटी से कहा, "बिना नहाये शादी करनी नहीं चाहिये। पहले नहाना होगा।"

राक्षसी की बेटी उसे एक सरोवर के पास ले गयी। थैली सहित वह सरोवर में कूद पड़ा और नीचे ही बैठा रहा।

राक्षसी की बेटी बहुत देर तक इंतज़ार करती रही, पर वह बाहर आया ही नहीं। उसे पानी से बेहद डर था। उसने सोचा कि वह पानी के अंदर ही मर गया होगा और सबेरे तक लाश तो बाहर आयेगी ही। तब जमके खा जाऊँगी। यों सोचकर वह गुफा के अंदर चली गयी।

उसके चले जाने के बाद शंकर ने अपना सिर पानी से ऊपर उठाया और जब इतमीनान हो गया कि वह चली गयी है तो वह सरोवर के बाहर आया और थैली सहित घर पहुँचा।

धन सहित लौटे शंकर की शादी अब पक्की हो गयी। शीतल अब जान गया कि उसके कठोर नियंत्रण के कारण ही उसका बेटा इतना निकम्मा बन गया था। वास्तव में वह नालायक नहीं, लायक है।

अपने को योग्य साबित करने में शंकर को ज्यादा समय नहीं लगा।

22
आर्य
शान्तिपुर की गद्दी को हड़पनेवाले वीर सिंह को खबर मिलती है कि जयनगर में जमीन की खुदाई से सोने की एक प्रतिमा मिली है। वह सेनापति जबर सिंह को सुखदेव से प्रतिमा लाने के लिए भेजता है। सरदार सुखदेव खून खराबी नहीं चाहता था इसलिए उसने प्रतिमा को ले जाने देने की स्वीकृति दे दी। लेकिन नाव द्वारा ले जाते समय प्रतिमा रहस्यमय ढंग सेगायब हो गई। बाद में वीरसिंह को पता चला कि इसकी नवनिर्मित मन्दिर में स्थापना होनेवाली है। सरदार की बेटी सुकन्या वीरसिंह का प्रस्ताव स्वीकार कर लेती है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
सुखदेव सुकन्या के निर्णय के विषय में आशंकित है।
बेटी! क्या तुमने अच्छी तरह सोच-विचार लिया है?
हाँ, पिताजी! यदि इससे प्रतिमा की रक्षा होती है, तो मैं यह बलिदान देने को तैयार हूँ।
खूब कहा! हे राजकुमारी! मैं प्रयास करूँगा कि तुम रानी के समान रह सको।
मेरी बेटी को पूजा पूरी करने दो।
मैं उसके समुचित स्वागत के लिए महल में वापस जाता हूँ। मेरा सेनापति यहाँ रहेगा।
वीरसिंह घोड़े पर सवार हो जाता है और जबरसिंह को आदेश देता हुआ दिखाई देता है।
मैं एक हाथी भेजूँगा। तुम्हें राजकुमारी के साथ मार्ग रक्षक बन कर आना है।
जी हाँ महाराज!
वीरसिंह के जाने के बाद सरदार और सुकन्या अकेले रह जाते हैं।
मैं केवल राजकुमार आर्य के परामर्श के अनुसार काम कर रही हूँ। याद रखिये, उसी ने प्रतिमा का उद्धार किया है।
पूजा के लिए अब चलें।

मन्दिर में स्वामी जयानन्द को राजकुमार आर्य सहायता पहुँचा रहे हैं। स्वर्ण प्रतिमा प्रभावशाली लग रही है।
जय माता दी!
ओ गौरी माँ
अम्बे माँ
माते, मैंने आप की आज्ञा का पालन कर दिया। अब आप अपनी शक्ति का प्रदर्शन कीजिये।
जयानन्द आरती सम्पन्न करते हैं।
पवित्र प्रसाद ग्रहण करने के लिए लोग पंक्तिबद्ध होते हैं।
माता तुम्हें आशीर्वाद दें!
जय माँ!
अनुष्ठान के सम्पूर्ण हो जाने पर जयानन्द सुखदेव और सुकन्या के पास आ जाते हैं।
मुझे चिन्ता है कि सुकन्या बहुत बड़ा खतरा ले रही है।
भगवती माँ इसका मार्गदर्शन करेंगी।
मुझे प्रसन्नता है कि प्रतिमा सुरक्षित बच गई।
सुखदेव, हमें वास्तव में बीरसिंह की नीयत के बारे में कुछ मालूम नहीं है। वह इतनी आसानी से प्रतिमा को नहीं भूल सकेगा।
हमें प्रतिमा और मन्दिर की रक्षा के लिए जनता पर निर्भर करना पड़ेगा।

महोदय,
वीर सिंह ने राजकुमारी के लिए हाथी भेजा है।
मार्गरक्षक प्रतीक्षा कर रहा है।
उसके प्रस्थान में विलम्ब न करें।
सुकन्या, क्या तैयार हो?
हाँ पिता जी।
सुकन्या जयानन्द से आशीर्वाद लेती है।
बाबा, कृपया इसे आशीर्वाद दीजिये।
जय माता दी!
भगवती माँ तुम्हें सुरक्षित पहुँचा दें।
जयानन्द अपने शिष्य को बुलाते हैं।
गोविन्द, शोभायात्रा के साथ-साथ जाओ। सुकन्या को तुम्हारी सहायता की आवश्यकता हो सकती है। उसका ध्यान रखना।
ठीक है, बाबा।
शोभायात्रा आगे बढ़ती है। कुछ सैनिक आगे-आगे चलते हैं। सेनापति जबरसिंह तथा अन्य सैनिक पीछे-पीछे चलते हैं।
गोविन्द सुरक्षित दूरी पर रहता है और दिखाई नहीं पड़ता।
अचानक....
रुक जाओ! मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे नीचे उतर जाने दो।
सुकन्या एक वृक्ष का सहारा लेती है।
मुझे हाथी की सवारी की आदत नहीं है। मुझे थोड़ी देर विश्राम करना पड़ेगा।
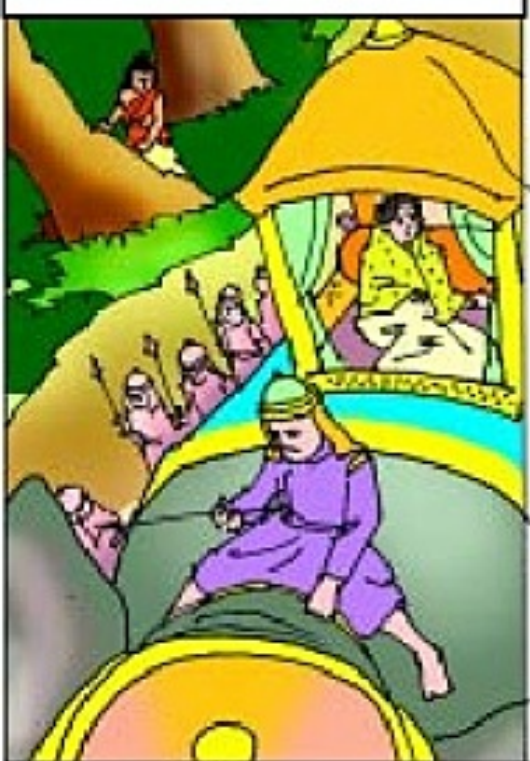
जबर सिंह बेचैन हो रहा है।

राजकुमारी, हमें जल्दी चलना चाहिये। राजा प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

मैंने तुम्हें कहा न? मैं थक गई हूँ।

चलो, हम समय नष्ट नहीं कर सकते!

औच! अपने हाथ हटा लो !

अचानक कहीं से आकर एक बन्दर जबर सिंह पर हमला कर देता है।

क्या ! कौन है? आऽऽऽ!

जबर सिंह गिर पड़ता है और अचेत हो जाता है। हाथी भाग जाता है। सैनिक तितर-बितर हो जाते हैं।

ओह!

बन्दर राजकुमार आर्य को पहचान लेता है।

सुकन्या कुछ राहत महसूस करती है । लेकिन उसे आश्चर्य भी होता है।

आर्य शिष्य की ओर मुड़ता है।

सुखदेव अपने निजी अंगरक्षक का पदचाप सुनता है।

क्रमशः

नालंदा विश्वविद्यालय

हमारे देश में गुप्त राजाओं का शासन काल स्वर्ण युग के नाम से सुप्रसिद्ध है। इस युग में कलाओं तथा शिल्पों ने अत्युत्तम स्थान प्राप्त किया। कालिदास, दंड आदि महान कवि गुप्त राजाओं के आस्थान के ही कवि थे। गुप्त राजाओं के शासन काल के दौरान ही अजंता गुफाओं की नकाशी हुई। इसी प्रकार इन्होंने अनेक शास्त्रों को भी प्रोत्साहित दिया।

ई.पू.४१३ में विक्रमादित्य का पुत्र प्रथम कुमार गुप्त सम्राट बना। इन्होंने ही नालंदा के समीप जग ख्याति प्राप्त बौद्धों के विश्वविद्यालय की स्थापना की।

इस विश्वविद्यालय में बौद्ध ग्रंथ पठन के साथ-साथ वेद पठन भी होता था।

यह विश्वविद्यालय सात सौ वर्षों तक निर्विघ्न सफलतापूर्वक चलता रहा। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए हमारे देश से ही नहीं बल्कि दक्षिण एशिया और चीन से भी विद्यार्थी आया करते थे। चीन देश के सुप्रसिद्ध यात्री ह्वानसांग ने ७ वीं शताब्दी में यहाँ रहकर कुछ समय तक शिक्षा ही प्राप्त नहीं की बल्कि इस विश्वविद्यालय के बारे में कई महत्वपूर्ण बातें भी लिखीं।

हजारों विद्यार्थी यहीं रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकें, इसके लिए असंख्य कक्षों का व विशाल मंडपों का निर्माण किया गया। नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष पटना नगर से पूर्व दिशा में ६० मील की दूरी पर हैं।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

त्वचा

तुम्हारे शरीर का सबसे बड़ा अंगकौन-सा है, क्या तुम जानते हो? तुम्हारी त्वचा। यह तुम्हारे पूरे शरीर के वज़न का कम से कम १६ प्रतिशत होता है।

यह अंग अनेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करता है। यह पर्यावरण से शरीर की रक्षा करता है। त्वचा में विद्यमान स्वेद ग्रन्थि अनावश्यक जल और लवण निकाल कर शरीर के ताप को नियमित रखती है। मेलनिन, जो त्वचा में रंगद्रव्य के रूप में रहता है, इसका रंग निर्धारित करता है। यह सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरण से भी त्वचा की रक्षा करता है।

त्वचा में आत्म-पुनरुज्जीवन का अनोखा गुण है। जख्मी होने पर त्वचा के कोषाणु तुरन्त प्रचुर मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

कंगारू चूहे

कंगारू चूहा कहने पर तुम्हारे मन में कैसा चित्र बनता है? इस रात्रिचर जन्तु के विषय में सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह न तो कंगारू है और न चूहा! फिर भी, इसकी कूद-चाल कंगारू के समान है, पीछे की टांगें बड़ी होती हैं और एक बड़ी रोमिल पूँछ होती है। यह अपनी पूँछ का प्रयोग संतुलन के लिए करता है।

इसकी ऊँचाई ३० से.मी. से कम है। यह दो पैरों पर चलता है। कंगारू चूहे का नासिका मार्ग लम्बा होता है जो प्रश्वास-वायु को शीतल रखता है। इसके गुरदों की बनावट ऐसी होती है जिससे उसके शरीर में जल सुरक्षित रखने में सहायता मिले। खाने के लिए ठहरने की बजाय कंगारू चूहे नीचे के जबड़े के साथ मिली अपनी रोमिल गाल की थैलियों में बीजों को एकत्र कर भर लेते हैं। जब जबड़े भर जाते हैं, तब कूद कर ये अपने बिलों में चले जाते हैं और सुरक्षा और शान्ति से खाते हैं।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

रोज़ डे

सन् १९९४ की १४ फरवरी को एक तेरह वर्ष की लड़की मिलिण्डा रोज़ हैथवे को ऐटकिन्स ट्यूमर का मरीज बताया गया। यह जानलेवा कैंसर का एक खास प्रकार का रोग था। लेकिन मिलिण्डा का निर्भीक उत्साह भय या विषाद के सामने झुका नहीं। रोग उसके जीने की खुशी को मार न सका। उसने अन्य कैंसर पीड़ित बच्चों में आशा, आनन्द तथा प्रसन्नता फैलाई। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने अपने पिता की सहायता से एक वेबसाइट बनाया। इसमें उसने इस बात पर बल दिया कि उसे एक रोगी नहीं बल्कि एक व्यक्ति के रूप में सम्बोधित किया जाना चाहिये।

मिलिण्डा १५ वर्ष की अल्प आयु में १५ सितम्बर १९९६ को देह त्याग कर परलोक चली गई और अपने पीछे आशा की एक परम्परा छोड़ गई। इस बहादुर लड़की की स्मृति में ही विश्व भर के कैंसर के अस्पताल और सोसाइटिज़ रोज़ डे मनाते हैं।

अपने भारत को जानो

मिश्रित प्रश्नोत्तरी

१. विश्नोई आन्दोलन क्या है?
अ) वृक्षपूजन
आ) भगवान विष्णु के भक्त
इ) सागर-पूजा
ई) विष्णु के मन्दिरों की तीर्थयात्रा

२. रॉक गार्डेन कहाँ स्थित है?
अ) चण्डीगढ़
आ) लुधियाना
इ) सोनीपत
ई) पानीपत

३. किस वर्ष 'भारतीय वन अधिनियम' स्वीकृत हुआ?
अ) १९२७ आ) १९६७
इ) १९०७ ई) १९५७

४. चिपको आन्दोलन कब आरम्भ हुआ?
अ) अप्रैल १९८३
आ) अप्रैल १९७३
इ) अप्रैल १९५३
ई) अप्रैल १९९३.

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

SPHOORTHY REDDY V.H.

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

शिव भगत राम
हरिजन विद्यालय,
सदर बाजार,
बैरकपुर,
कोलकाता-६००१२०.

शादी या सगाई।
है गूँजती शहनाई।।

'अपने भारत को जानो' के उत्तर:

१. विष्णु के भक्त
२. चण्डीगढ़
३. १९२७
४. अप्रैल १९७३

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (Hindi) APRIL 2005
Regd No. TN/PMG(CCR)-594/03-05
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Licensed to post without prepayment No. 383/03-05 Foreign - WPP. No. 382/03-05

PCRA Page Website : www.pcra.org

सड़क पर सुरक्षा

वीना का क्लास, सड़क सुरक्षा सप्ताह आयोजन के एक अंश के रूप में गठित "सड़क सुरक्षा" निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेता है। शीघ्र ही पुरस्कार वितरण का वह शुभ दिन आ जाता है।

निर्णायकों में से एक सदस्य नगर के पुलिस कमिश्नर अपने स्थान पर से खड़े होकर कहते हैं, "तुम सब ने बहुत अच्छा लिखा है, इतना अच्छा कि सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि का चयन करना हम लोगों के लिए बहुत कठिन हो गया। तुम सब में से अधिकांश ने लिखा है मोटर चालक और पदयात्री कैसे सड़क को सुरक्षित रख सकते हैं। जो भी हो, एक प्रविष्टि ने विशेष रूप से हम सब को प्रभावित किया - ज़ीबरा क्रॉसिंग पर सुरक्षा के बारे में यह एक मात्र निबन्ध था।"

कुछ रुककर वे फिर कहते हैं, "ज़ीबरा क्रॉसिंग पदयात्रियों के लिए सुरक्षित माना जाता है। ज़ीबरा क्रॉसिंग के निकट आने पर वाहनों से अपनी गति धीमी कर देने की अपेक्षा की जाती है । निबन्ध ने एक महत्वपूर्ण बिन्दु की ओर संकेत किया है। वह यह कि ज़ीबरा क्रॉसिंग पर भी किसी को एक झपट में सड़क पार नहीं करना चाहिये, बल्कि रुककर पहले दाईं ओर, फिर बाईं ओर और फिर दाईं ओर देखकर तथा उपगामी वाहन के बारे में सुनकर ही पार करना चाहिये। बच्चो, तुम जानते हो कि एक लापरवाह पदयात्री केवल अपने ही जीवन को नहीं, बल्कि सड़क का प्रयोग करनेवाले सभी व्यक्तियों के जीवन को भी खतरे में डाल देता है। उसके कारण कोई गम्भीर सड़क दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि उसे चोट से बचाने के लिए मोटर चालक किसी और चीज़ या व्यक्ति से टकरा सकता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि एक पदयात्री को ज़ीबरा क्रॉसिंग पर उतना ही सावधान रहना चाहिये जितना कि मोटर चालकों को। जिस निबन्ध में इस बिन्दु पर बल दिया गया है वह वीना नाम की छात्रा का है। हम लोगों ने सर्व सम्मति से उसे प्रथम पुरस्कार देने का निश्चय किया है।"

वीना शरमाती हुई खड़ी होती है और दर्शकों की तालियों से वातावरण गूँजने लगता है।